RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 2 अंक 2 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका **अक्टूबर 2018**

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

नारायणसिंह भाटी **सभापति सुरेश पालीवाल**

Exclusive Interview

An ISO -9001:2015
M. 9829445469, 9929495228
SHiNE
COMPUTERS
SHiNE
RKCL
IT Shapes Future
राजसमन्द का नं. 1
कम्प्यूटर संस्थान
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
RS-CIT
Tally
Power of Simplicity
DCA
PGDCA
PDCA
Spoken English
शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469
शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
डॉ. दर्शना व्यास सिंगला
(M.B.B.S., D.G.O.) बॉम्बे हॉस्पीटल, मुंबई
फेलोशिप ट्रेनिंग लेप्रोस्कोपिक सर्जरी
सामान्य प्रसव, सिजेरियन एवं बच्चेदानी के ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध है।
आशीर्वाद हॉस्पिटल
Healing Hands, Caring Hearts
ASHIRWAD HOSPITAL
आशीर्वाद हॉस्पिटल
50 फिट रोड, टी.वी.एस. चौराहा कांकरोली
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें : 02952-225005

सम्पादकीय राजनीति की सार्थकता

पाठकों के सुझाव की पूर्ति ही जयवर्द्धन का ध्येय है। सितम्बर के अंक में सांसद हरिओमसिंह राठौड़ के साक्षात्कार और ग्राम यात्रा कॉलम में राज्यावास ग्राम प्रकाशित किया गया। इस पर पाठकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। परिवर्तन की कड़ी में सम्पादकीय हमारे अतिथि सम्पादक लिखेंगे। इस बार अतिथि सम्पादक है, शिक्षाविद् व समाजसेवी भगवत शर्मा।

विधानसभा चुनाव की रणभेरी बजने से पहले ही मुख्य राजनीतिक पार्टियों के नेता जनता के मध्य चुनावी वादे लेकर जाने लगे हैं। वर्तमान में सत्तारुढ़ भाजपा की विधायक व उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी पिछले चुनावी वादे और सरकारी घोषणा का शिलान्यास व उद्घाटन कर पुन: विधायक जीत का जनता से आश्वासन मांग रहे है, तो दूसरी ओर कांग्रेस भी कार्मिक, किसान, व्यापारियों की नाराजगी पर आंदोलन का बखान करते हुए भाजपा राज को असफल बताते हुए रैली-सम्मेलनों से वोट बटोरने के उपाय शुरू कर दिए हैं। जातिवादी, हिन्दूवादी, अल्पसंख्यक व क्षेत्रवाद से जीत मुश्किल है। अब वही उम्मीदवार जीत सकता है, जिसने अब तक जो वादे किए, उस पर वह कितना खरा उतरा।

10 अप्रेल 1991 को जिले मे रूप में अस्तित्व में आए राजसमंद अब भी अन्य जिलें के मुकाबले विकसित नहीं हो सका। यहां की मुख्य समस्या राजसमंद झील सदानीरा भरने, ट्रांसपोर्ट नगर, श्री द्वारकाधीश मंदिर तक आवाजाही का स्थायी नया मार्ग, कृषि महाविद्यालय, मेडिल कॉलेज, केन्द्रीय विद्यालय, टाउन हॉल सरीखी छोटी छोटी समस्याओं से महरूम है। इसके अलावा मावली से मारवाड़ तक रेल लाइन को ब्रॉडगेज में तब्दील करना, करीब 15 वर्षों से देवास व माही प्रोजेक्ट से राजसमंद झील तक पानी लाने के जो वादे किए, मात्र जनता के साथ छलावा ही सिद्ध हुए। श्रम मंत्री डॉ. जसवंतसिंह यादव का 6 से 5 वाला ईएसआई अस्पताल की घोषणा भी मात्र स्वप्न बनकर रह गया। अब जनता किस पर और कितना भरोसा करें, यह विचारणीय बिन्दू है। दूसरी ओर 27 जुलाई 2012 को कांग्रेस शासन में कांकरोली रेलवे स्टेशन उजड़ गया, जिससे मात्र एक पटरी का स्टेशन बनकर रह गया, तो गोमती से उदयपुर तक फोरलेन निर्माण के दौरान राजनगर और सनवाड़ को दो फाड़ दिया, जिसका दंश यहां की जनता युगों-युगों तक भोगती रहेगी और नेताओं को कोसती रहेगी। मुख्यालय का क्रमबद्ध विकास की योजना बने। साथ ही कर्मचारियों से किए गए वादे पूरे नहीं होने से यह चुनाव जीतना आसान नहीं है।

अतिथि सम्पादक : भगवत शर्मा
सचिव नगर विकास समिति राजसमंद
मोबाइल : 94608-02931

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
सम्पादन सहयोगी	हेमेन्द्रसिंह, सूर्यप्रकाश दीक्षित
विज्ञापन प्रबंधक	जितेंद्र शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
ग्राफिक डिजाइन	महेंद्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी :** अब शुरू हुआ चुनावी घमासान-जनता के हाथ जोड़ने में लगे नेता — पेज 4
2. **तीखी मिर्ची :** राजनीति का फंडा — पेज - 8
3. **व्यंग्य :** हर समाज का अपना विधायक और सर्वाधिक — पेज -9
4. **राजसमंद की खबरें :** हमेशा फहराता रहेगा तिरंगा — पेज - 10
5. **सम्मान :** चतुर कोठारी एवं कमर मेवाड़ी का सम्मान — पेज - 11
6. **माटी का लाल :** कांकरोली के जीवन रक्षक गौतम सनाढ्य — पेज - 14
7. **साक्षात्कार** पार्षद बनने में भी नहीं थी रूचि, मगर बन गए सभापति — पेज - 16
8. **ग्राम यात्रा :** खेड़ादेवी की आस्था में एकजुट पीपरड़ा — पेज - 20
9. **कहानी :** राहु, केतू और मंगल — पेज - 26
10. **मेवाड़ी चौपाल :** सात जनमां रौ करज — पेज - 28
11. **कविताएं :** झील के जज्बात, अटल नाम का ध्रुवतारा — पेज -30
12. **राजसमंद की खबरें:** चारभुजा में जलझूलनी का लक्खी मेला — पेज -31

अब शुरू हुआ चुनावी घमासान, जनता के हाथ जोड़ने में लगे नेता

भाजपा का दावा- फिर खिलेगा फूल, कांग्रेस की जुगत- सत्ता हथियाना
नाथद्वारा में दिवंगत कल्याणसिंह चौहान का कौन विकल्प, मुश्किलें बढ़ी

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

कोई चुनाव लड़ने की तैयारी में जुटा है, तो कोई किसी को चुनाव लड़ाने की जोर आजमाइश में है। राजनीतिक दलों ने अभी पत्ते नहीं खोले कि किस विधानसभा में कौन प्रत्याशी होगा, मगर उससे पहले दावेदार कई कतार में लग गए हैं। जिला मुख्यालय की राजसमंद विधानसभा के साथ नाथद्वारा, कुंभलगढ़ व भीम विधानसभा में भाजपा ने फिर से फूल खिलाने के लिए कमर कस ली है, जबकि कांग्रेस चारों विधायक की कुर्सी छीनने की जुगत में है। गत चुनावों में भाजपा व कांग्रेस से बगावत करने वाले नेताओं की भी फिर घर वापसी हो गई, मगर गुटबाजी में बंटे राजनीतिक दलों के नेताओं के लिए इस बार हर विधानसभा में जीत हासिल करना बड़ी चुनौती है। चुनाव में हार मिले या जीत, मगर अखबारों में छपना और बिना खर्च किए प्रसिद्धी किसे बुरी लगती है। इसलिए राजनेता और राजनीतिक दलों के लिए चुनाव लड़ना बहुत जरूरी है।

दावेदारों ने शुरू कर दिया प्रचार प्रसार

राजसमंद से लेकर नाथद्वारा, भीम व कुंभलगढ़ विधानसभा क्षेत्र में भाजपा, कांग्रेस के साथ विभिन्न दलों व निर्दलीय संभावित दावेदारों ने तीन माह पहले से ही चुनाव प्रचार शुरू कर दिया। शहर से लेकर ठेठ गांव- ढाणी तक डोर टू डोर जनसंपर्क किया जा रहा है। इसके अलावा सोशल मीडिया पर भी जोर शोर से प्रचार प्रसार किया जा रहा है। हाइवे व ग्रामीण क्षेत्र की सड़क किनारे भी बड़े बड़े बैनर व हॉर्डिंग लगा दिए गए हैं। साथ ही गांव-ढाणी व शहर में विभिन्न समुदायों के हर छोटे बड़े आयोजन में भी शरीक होने लगे हैं। उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी, कुंभलगढ़ विधायक सुरेन्द्रसिंह राठौड़ व भीम विधायक हरिसिंह रावत तो छह माह से ग्रामीण क्षेत्र में गत पांच वर्षो में जितने भी विकास कार्य हुए, उनका लोकार्पण करने के बहाने ग्रामीणों से वोट मांग रहे हैं। इसी तरह राजसमंद में कांग्रेस के प्रबल दावेदार नारायणसिंह भाटी, देवगढ़ में निर्दलीय ताल ठोकने वाले अजय सोनी, आमेट से दिलीपसिंह राव द्वारा भी जनसंपर्क जोरों पर है।

राजसमंद विधानसभा

कांग्रेस से नारायणसिंह भाटी को मिला टिकिट तो किरण माहेश्वरी के बीच आकर्षक होगा मुकाबला

राजसमंद विधानसभा में भाजपा गुटबाजी में बंटी होने के बावजूद मजबूत जमीनी पकड़ के चलते किरण माहेश्वरी को टक्कर देने के लिए इस बार कांग्रेस किसी मजबूत दावेदार को खड़ा करने के प्रयास में है। राजसमंद में किरण माहेश्वरी के सामने कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष नारायणसिंह भाटी प्रबल प्रत्याशी माने जा रहे हैं, जिससे मुकाबला कांटे की टक्कर का रह सकता है। उल्लेखनीय है कि ये वहीं नारायणसिंह भाटी है, जिन्होंने एक दशक पहले जिला परिषद राजसमंद के तत्कालीन जिला प्रमुख नरेन्द्रसिंह सोलंकी के निधन के बाद हुए उप चुनाव में भाजपा के 16 सदस्यों के साथ पूर्ण बहुमत व कांग्रेस के 9 सदस्य होने के बावजूद जिला प्रमुख की कुर्सी छीन ली थी। इस बार चर्चा है कि जिला प्रमुख चुनाव के अप्रत्याशित परिणाम देने वाला भाटी ही कांग्रेस की तरफ से किरण को कड़ी टक्कर दे सकता है। इसी तरह कांग्रेस में दिग्विजयसिंह राठौड़, दिनेश बाबेल, सुन्दरलाल कुमावत, गुणसागर कर्णावट, आशा पालीवाल भी दावेदारी जता रहे हैं। इसको लेकर सभी ने शक्ति प्रदर्शन शुरू कर दिया है। ऐसे में राठौड़ व भाटी ही प्रबल दावेदार माने जा रहे हैं।

नारायणसिंह भाटी

किरण माहेश्वरी

सोशल मीडिया पर भाजपा के कई दावेदार

भाजपा में किरण माहेश्वरी की बराबरी में दावेदारी जताने अब तक कोई खुलकर सामने नहीं आया है। सोशल मीडिया पर अशोक रांका, लीलेश खत्री, महेन्द्रसिंह चौहान सहित कुछ नामों की चर्चा होती रही है, मगर सामान्यतया चर्चा है कि किरण के कद के अनुरुप भाजपा में कोई मजबूत दावेदार नहीं है, जिसकी पार्टी में भी अच्छी पहुंच हो और शहर से गांव तक लोगों से मजबूत जुड़ाव हो। ऐसे में भाजपा के कुछ दावेदार सिर्फ सोशल मीडिया तक ही सीमित होकर रह गए हैं।

नाथद्वारा विधानसभा

एक दशक बाद डॉ. जोशी फिर कर सकते हैं वापसी

नाथद्वारा में कल्याणसिंह चौहान के विकल्प के तौर पर उनकी पत्नी कल्पना चौहान, विरेन्द्र पुरोहित, बालयोगी संत संतोषनाथ, सांसद हरिओमसिंह राठौड़, संगीता चौहान, लक्ष्मणसिंह झाला, योगेंद्रसिंह चौहान, मानसिंह बारहठ आदि के नाम चर्चा में है। मौजूदा परिस्थिति में कल्याणसिंह के विकल्प के तौर पर उनकी पत्नी कल्पना, विरेंद्र पुरोहित व संत को प्रबल दावेदार माना जा रहा है। दो बार लगातार नाथद्वारा सीट पर कब्जा रहने के बाद इस बार भाजपा का हैट्रिक बना पाना आसान नहीं दिख रहा है। क्योंकि चौहान जैसा कोई मजबूत दावेदार नहीं दिख रहा है, जो इस बार कांग्रेस को टक्कर दे सके।

वर्ष 2008 में विधानसभा चुनाव के दौरान डॉ. सीपी जोशी को 1 वोट से शिकस्त देकर विधायक बने कल्याणसिंह चौहान प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश की राजनीति में हलचल मचा दी थी। उल्लेखनीय है कि चौहान भी लंबे समय तक कांग्रेस के कार्यकर्ता रहे और डॉ. जोशी के नेतृत्व में कई चुनाव सम्पन्न कराए। बाद में कांग्रेस छोड़कर भाजपा से जुड़कर 2008 के चुनाव में चौहान ने अपने ही राजनीतिक गुरु को हरा दिया।

डॉ. सीपी जोशी

बालयोगी संत संतोषनाथ

उसके बाद डॉ. जोशी ने नाथद्वारा छोड़कर भीलवाड़ा से वर्ष 2009 में लोकसभा चुनाव जीतकर केन्द्रीय मंत्री बने। फिर डॉ. जोशी वर्ष 2014 में जयपुर सीट पर चुनाव में राज्यवर्द्धनसिंह राठौड़ से हार गए। बाद में कांग्रेस राष्ट्रीय महासचिव रहते हुए उनके नेतृत्व में कई राज्यों के चुनाव कराए गए। अब माना जा रहा है कि डॉ. जोशी पुन: लौटने से राजसमंद जिले में कांग्रेस का दबादबा रहेगा और उनको इस बार फिर नाथद्वारा सीट से प्रबल दावेदार माना जा रहा है। क्योंकि डॉ. जोशी का ग्रामीण क्षेत्र में आज भी दबदबा कायम है। साथ ही कांग्रेस के जिलाध्यक्ष देवकीनंदन गुर्जर और मांगीलाल पालीवाल का नाम भी चर्चा में है।

कुंभलगढ़ विधानसभा

कांग्रेस में बाहरी दावेदार का जोर, इसलिए असमंजस है कि किसके बीच रहेगा मुकाबला

सुरेन्द्रसिंह राठौड़

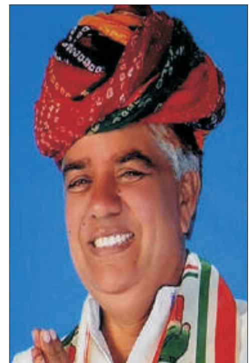
गणेशसिंह परमार

देवकीनंदन गुर्जर

दिलीपसिंह राव

आमेट व कुंभलगढ़ उपखंडों को मिलाकर बने कुंभलगढ़ विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस का हमेशा दबदबा रहा, मगर एक डेढ़ दशक से भाजपा के विधायक सुरेन्द्रसिंह राठौड़ का वर्चस्व है। कुंभलगढ़ के तत्कालीन विधायक हीरालाल देवपुरा राजस्थान के मुख्यमंत्री भी रह चुके हैं, जिनके पुत्र सत्यनारायण देवपुरा भी कांग्रेस से दावेदारी जता रहे हैं। इसी तरह पूर्व विधायक गणेशसिंह परमार भी फिर कांग्रेस से टिकिट लेने की कतार में है। आमेट के दिलीपसिंह राव भी इस बार कुंभलगढ़ विधानसभा से कांग्रेस से टिकिट लेने की होड़ में जुट गए हैं। इस बार कुंभलगढ़ विधानसभा पर उदयपुर कांग्रेस देहात अध्यक्ष लालसिंह झाला की भी निगाह है, जबकि नाथद्वारा से अगर डॉ. सीपी जोशी मैदान में उतरते हैं, तो कांग्रेस जिलाध्यक्ष देवकीनंदन गुर्जर के भी कुंभलगढ़ विधानसभा से चुनाव लड़ने की अटकले लगाई जा रही है। क्योंकि जातिगत लिहाज से चारभुजा व आमेट क्षेत्र में गुर्जर समुदाय में देवकीनंदन गुर्जर का दबदबा है। इसके चलते कांग्रेस के कई दावेदार कतार में लग गए है।

दूसरी ओर भाजपा से मौजूदा विधायक सुरेन्द्रसिंह राठौड़ के अलावा कोई भी कार्यकर्ता प्रत्यक्ष तौर पर सामने नहीं आ रहा है। जिस तरह राजसमंद में उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी का दबदबा कायम है, ठीक ऐसी स्थिति राठौड़ की स्थिरता बनी हुई है। हालांकि विकास कार्य एवं गांव-ढाणी तक जिस तरह माहेश्वरी की पकड़ है, वैसी पहुंच नहीं होने के बावजूद राठौड़ के अलावा कुंभलगढ़ विधानसभा क्षेत्र में भाजपा से कोई नया चेहरा दिखाई नहीं दे रहा है। उल्लेखनीय है कि राठौड़ पिछले कार्यकाल में सिंचाई राज्य मंत्री रह चुके हैं, जिससे पार्टी में भी उनकी खास जगह है।

सांगठकला पंचायत के बागोटा में कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक पूर्व जिलाध्यक्ष नारायणसिंह भाटी की अध्यक्षता में हुई।

भीम विधानसभा

इस बार भाजपा और कांग्रेस के वोट में निर्दलीयों की सेंध, बिगड़ेगा जीत का गणित

हरिसिंह रावत

लक्ष्मणसिंह रावत

अजय सोनी

प्यारी रावत

भीम विधानसभा क्षेत्र में प्रारम्भिक काल से ही राजनीति का दोहरा चरित्र हावी रहा। सामाजिक और क्षेत्रीय विकास में एक परिवार का दबदबा रहा। रोटी, बेटी और जातिगत भावनाओं को पोषित कर हर बार वोटों की राजनीति होती रही। उच्च शिक्षित तथा सोने की चम्मच मुंह में लेकर राजनीति की दहलीज पर कदम रखने वाले अपने चमचों- चाटुकारों पर तो बहुत मेहरबान रहे, पर आम जनता को कभी तवज्जों नहीं दी। क्षेत्र के राजनैतिक रूझान व मानसिकता को समझना बहुत मुश्किल काम है। क्योंकि यहां वोटों की खरीद फरोख्त होती है।

1998 में जब पूर्व गृहमंत्री और विधायक लक्ष्मणसिंह जीते, तो देवगढ़ से भीम तक जुलूस निकाला गया। तब वर्तमान विधायक हरीसिंह सारथी थे। कांग्रेसी विचारधारा वाले हरीसिंह ने पार्टी बदली और 2003 के विधानसभा चुनावों में भाजपा के उम्मीदवार के रूप में प्रतिद्वंद्वी बनकर लक्ष्मणसिंह के सामने खड़े हुए। एक ही स्वाद से त्रस्त जनता का आवेश और मोदी लहर पर सवार होकर सफल व्यवसायी हरीसिंह चुनाव में भारी मतों से राजनैतिक वैतरणी पार कर गए। जहां लक्ष्मणसिंह निर्दलीय और पार्टी टिकट के बावजूद तीन बार हार के भी आज क्षेत्र में मजबूत पकड़ बनाए हुए हैं, वहीं हरीसिंह की स्वच्छ छवी के बूते मैदान में उतरने को तैयार है। कांग्रेस अगर लक्ष्मणसिंह को टिकट नहीं देती है तो उनकी पत्नी बसंता रावत को मैदान में उतार सकते हैं। टोगी सरपंच जयेन्द्रसिंह, घनश्यामसिंह, दूदाराम सालवी, गोपालसिंह पीटीआई, दिलिपसिंह सिसोदिया, प्रेमलता चौहान, देवगढ़ के अजय सोनी (माहेश्वरी) भी विधायकी की दौड़ में है।

आज हालात वही है। भाई भतीजावाद व भूमि विवादों से क्षेत्र में चर्चित विधायक भी क्षेत्र में कुछ खास उल्लेखनीय विकास कार्य नहीं करवा पाए। 2003 से 2018 तक विधायक रहने, अपनी पसंद के प्रधान, जिला प्रमुख होने के बाद भी भीम गंदगी के ढ़ेर पर खड़ा है। ग्रामीण क्षेत्र से पलायन जारी है। छोटी जोत की खेती होने व मानसून की बेरूखी इस क्षेत्र की मुख्य समस्या है। स्थानीय स्तर पर बेरोजगारों के हाथ में कोई काम नहीं है जिसके कारण युवाओं में शराबखोरी व अपराधिक गतिविधियां की ओर रूझान बढ़ रहा है।

यूं तो राजनैतिक करवट पहले भी बदली थी, भीम देवगढ़ की। शिक्षाविद् रासासिंह ने विधायक उम्मीदवार के रूप में कांग्रेस उम्मीदवार लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत के सामने चुनाव की चुनौती रखी। जातिगत बाहुल्य वोटों पर उनका विश्वास था।

वर्तमान में भाजपा व कांग्रेस ध्रुवीकरण चरम पर है। बर्बाद जनता को ही होना हैं। क्षेत्र में बहुसंख्यक जातिगत वोटों को देख शह और मात देने की बिसात बिछ रही है। योग्य अयोग्य का सवाल है ही नहीं। इतिहास फिर दोहराएगा। ऐसी संभावना बन रही है। क्षेत्रीय लोगों में वर्तमान मंडावर सरपंच प्यारी देवी भी भाजपा दावेदार के रूप में ताल ठोक सकती है। सुदृड़ जनाधार के साथ महिलाओं में लोकप्रिय हुए है। ऐसे में अगर प्यारी देवी को टिकट मिलता है तो चुनावी समीकरणों में उलटफेर संभव है।

खैर, राजनीतिक समीकरणों में उलझती- सुलझती घटनाओं के बीच जो सबसे दर्दनाक बात है, वो है विकास। क्षेत्रीय लोगों की जरूरतों को समझने की कोशिश किसी राजनेता ने नहीं की। सांसद आमजन से दूर ही रहे। संसदीय क्षेत्र से जीतने के बाद 80 फीसदी लोग सांसद को दुबारा देख ही नहीं पाए। यही हाल कमोबेश विधायकों का है। वन सुरक्षित करने, नए जलाशयों का निर्माण, बिजली पानी और स्वास्थ्य सेवा सुदृड़ करने की ओर भावी विधायक को ध्यान देना ही चाहिए। फ्लोराइड पानी एवं फोरलेन के अधूरे पड़े कार्य से प्रतिवर्ष लगभग 400 लोग बेमौत मर रहे हैं। इसका जिम्मेदार कौन है ? जब तक स्थायी विकास का ढ़ांचा खड़ा नहीं होगा और जनप्रतिनिधि लोगों के बीच नहीं जाएंगे, तब तक अदला-बदली का खेल चलता ही रहेगा।

गोविन्दसिंह चौहान,
भागावड़, भीम, मो. 9783207045

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड :
जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिएं-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

राजनीति का फंडा

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

हमारा अज़ीज़ मित्र पं. जोशी इन दिनों बड़ा परेशान है। बात बात पर घर के लोगों से झगड़ पड़ता है। कुछ भी कारण ना हो तो भी कभी बच्चों को डांटने लगता, तो कभी पत्नी को। कल मुझे भाभीजी ने फोन किया और कहा अपने मित्र को संभालो, फिर मुझे दोष मत देना।

मेरा मित्र पंडित बृजमोहन जोशी शुरू से बजरंगबली का परम भक्त और वर्तमान राजनीति में दुर्लभ ईमानदार टाइप का मोहल्ले का नेता है। पूर्व सरकार में हुए घोटालों पर गांव की चौपाल का वहीं मुख्य वक्ता हुआ करता था। बड़ी ऊंची आवाज में भ्रष्टाचार, राम मंदिर, आरक्षण आतंकवाद आदि मुद्दों पर बहस कर अपनी पार्टी का प्रचार किया करता था। तब हुए घोटालों की लिस्ट तो उसे हनुमान चालीसा की तरह कंठस्थ हो गई थी। विपक्ष में पत्ता भी खड़कता तो जोशी जी को पता चल जाता। उसके पक्ष की सरकार बनी तो उसका कद भी बढ गया, उसे भी नगर अध्यक्ष का एक पद दे दिया गया। अब हनुमान भक्त जोशी को आशा थी, राम मंदिर बनने की, कश्मीर का हल निकलने की। राजनीति में अक्सर जो बोला जाता है, वह होता नहीं है और जो होता है, वह पहले बोला नहीं जाता है।

सरकार के कड़े कदमों पर चौराहे की चौपाल पर अब तक जोशी जैसे तैसे लोगों को संतुष्ट कर देता था, मगर अब आए दिन लोग पूछने लगे जोशीजी सीमा पर क्या हो रहा है ? कभी कोई पूछता, अरे उस राम मंदिर का क्या हुआ?, कभी कोई पूछता एससी- एसटी कानून में बदलाव की क्या जरूरत पड़ गई? कभी कोई पेट्रोल की कीमत तो कोई मस्जिद में जाने की जरूरत पूछता, कोई पूछता यह राफेल सौदे की विस्तृत जानकारी तो बताओ? अब तो चौराहे पर कोई दिख भी जाए, तो जोशी वापस घर आ जाता। आखिर परेशान होकर चौराहे की चौपाल पर उसने जाना ही छोड़ दिया। मगर घर में बैठे- बैठे भी उसको घुटन महसूस होने लगी और परिवार के लोग भी उसके व्यवहार से परेशान हो गये तो मैंने एक दिन मित्र को जाकर समझाया।

मैंने कहा राजनीति को इतना क्या सीरियस लेते हो। राजनैतिक वादों में सच्चाई ढूंढना गधे के सिर पर सिंग ढूंढने की जैसा है। प्रत्येक सफल राजनेता के जीवन में यह दौर आता ही हैं, जब उसे सच्चाई के रथ को त्याग कर समझौते के रथ में सवार होना पडता है। फिल्म के नायक की तरह बहुत से वादों और सच्चे इरादों का अभिनय कर चुनावी नाव से पार होना पडता है। राजधानी का मफलर ब्रांड हरिश्चंद्र भी सच्चाई के दम पर हूंकार भरता था, मगर अब तो गिरगिट की तरह रंग बदला, तो अब उसे कोई थप्पड़ भी नहीं मारता। अरे ये सच्चाई का जिसने भी हाथ थामा उसने थप्पड़ ही खाई है। आजकल तो सच्चाई संत महात्मा और भजन गायक के आचरण में भी नहीं मिलती है। टीवी पर सुबह गीता का पाठ सुनाएंगे, तो शाम को किसी गीता के साथ लफड़ा कर देंगे। संत आशाराम, फलाहारी, रामरहीम को देखकर हिम्मत मिली, तो अपना अनूप जलोटा भी खोटा होने में नहीं झिझक रहा है।

तुम इस सच्चाई का जैकेट उतार कर पुन: नए जोश के साथ उठो और अपोजीशन के पुराने चिट्ठे एक बार फिर खोलो। कुछ नया मिर्च मसाला लगाओ और ट्राई करो। चौपाल फिर तुम्हें सुना जाएगा। अब जोशी के चेहरे में नई चमक दिखाई देने लगी।

आखिर जोशी, बीती बातों को भूलकर फिर नई खट्टी- मिठ्ठी, हंस- मजाक के तड़के की चिकनी चुपड़ी बातों के साथ चौपाल पर पहुंचा, तो हर बोल पड़ा- वाह! जोशीजी, वाह! जोशीजी...

हर समाज का अपना विधायक और सर्वाधिक विधायक वाले समाज का ही मुख्यमंत्री!

2018 में विधानसभा और 2019 में लोकसभा चुनाव छाती पर आ गए हैं। जाहिर है इन चुनावों की वेतरणी सारे राजनीतिक दल और उनके नेता, कार्यकर्ता पार करना चाहते हैं। राजनीति कभी जनहित की बात करती थी, जो बाद में दलहित में तब्दील हो गई। अब तो यह सिर्फ जाति और समाज की होकर रह गई। ये बात जाति और समाजों को भी खूब पता चल गई, तभी हर समाज चुनाव के टिकट के लिए खम्भ ठोक कर खड़ा हो जाता है।

- आसन्न चुनावों में भी हमें (बापड़े वोटर को, जिसकी कोई जाति/ समाज नहीं होता) यह दृश्य देखने को मिलेंगे। समाज को टिकट नहीं मिलेगा, तो समाज चुनाव का बहिष्कार करेगा। अभी तो स्वर्ण समाज वाले ही तख्तियां लगाए बैठे हैं। यह स्वर्ण का घर/ दफ्तर/ दुकान है, यहां से वोट नहीं मिलेगा। अरे! स्वर्ण समाज वालों, यदि कोई तुम्हारे वाला खड़ा हुआ, तब भी वोट नहीं दोगे क्या?
- असल में आज समाज की नाराजगी राजनीतिक दलों के लिए मुसीबत का सबब बनती जा रही है। सोचता हूं कि चुनाव के पहले चुनाव आयोग दलों और हम विधानसभा क्षेत्र का परिसीमन धर्म/ जाति/ समाज के हिसाब से कर देना चाहिए और हर समाज के एक एक प्रतिनिधि के लिए टिकट देना अनिवार्य कर देना चाहिए।
- तब शहर का एक विधायक नहीं होगा, ब्राह्मण समाज का विधायक वेश्य (इसमें जैन, अग्रवाल, खंडेलवाल, माहेश्वरी सबके अलग अलग विधायक होंगे, वरना इनकी नाराजगी का खतरा है।), यादव, सिंधी, सिख, मुस्लिम, वाल्मिकी, मालवीय समाज का एक एक प्रतिनिधि होगा।
- फिर जिस समाज के ज्यादा विधायक होंगे। उसी समाज का मुख्यमंत्री भी चुन लिया जाएगा। तब आएगा, सच्चा समाजवाद। शहर बापड़ा एक, टिकट बेचारा इकलौता। समाज, जातियां, उप जातियां इतनी सारी। टिकट द्रोपदी किससे चीर हरण करवाए। क्यों न हम अपने मनुष्य समाज में से एक सर्वाधिक योग्य व्यक्ति को निर्विरोध चुनकर भेज दे ? बगैर किसी दल या दलदल के।

मुकेश जोशी
व्यंग्यकार, उज्जैन (मध्यप्रदेश)

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - कमल शेख, 94147-86464
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
कुंभलगढ़ - देवीसिंह मो. 8003124089
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

राजसमंद में 100 फीट ऊंचाई पर लाइट के उजाले में रात को भी फहराता रहेगा तिरंगा

अमर जवान ज्योति स्मारक एवं उद्यान का किया लोकार्पण

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद में जिला कलक्ट्री के ठीक सामने करीब एक करोड़ की लागत से नवनिर्मित अमर जवान ज्योति स्मारक एवं उद्यान का मंगलवार को उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी, राज्य सैनिक कल्याण बोर्ड अध्यक्ष प्रेमसिंह बाजोर और सांसद हरिओमसिंह राठौड़, नगरपरिषद सभापति सुरेशचंद्र पालीवाल ने लोकार्पण किया। भारत माता की मूर्ति का अनावरण किया। फिर अमर जवान ज्योति स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की गई और 100 फीट ऊंचाई पर फहरने वाले तिरंगे और नवग्रह मंच का अवलोकन किया। कार्यक्रम में शहीद परिवार की वीरांगना रूडीदेवी, फूलनदेवी, पुष्पादेवी का एकलई और शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। कार्यक्रम में कलक्टर श्यामलाल गुर्जर, नगरपरिषद आयुक्त बृजेश राय, भाजपा जिलाध्यक्ष भंवरलाल शर्मा, कर्नल जगदेवसिंह, महेंद्र टेलर, सत्यनारायण पूर्बिया, मानसिंह बारहठ, उप सभापति अर्जुन मेवाड़ा, प्रतिपक्ष नेता अशोक टांक आदि मौजूद थे।

पीढ़ियों तक होगा प्रेरणा का संचरण

उच्च शिक्षा मंत्री ने स्मारक व उद्यान को देशभक्ति की भावना संचारित करने वाला बताया। साथ ही कहा कि इससे युवाओं में देश भक्ति के संस्कार, कर्तव्य परायणता और समर्पण का विस्तार होगा। मंत्री ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी। महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री का स्मरण करते हुए वीरांगनाओं को भी नमन किया।

शहीदों के स्मारक मन्दिर से कम नहीं

राज्य सैनिक कल्याण बोर्ड अध्यक्ष प्रेमसिंह बाजौर ने राजस्थान में सैनिक कल्याण की दिशा में किए गए कार्यों की जानकारी दी और नगर परिषद को शानदार स्मारक बनाने के लिए बधाई दी। उन्होंने शहीदों को देवतुल्य बताया और कहा कि आज उन्हीं की बदौलत हम स्वाधीनता पूर्वक जीवन निर्वाह कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों में देशभक्ति के संस्कार जगाने की आवश्यकता है और इसके लिए शहीदों, उनके स्थलों और उनकी शौर्य गाथाओं से परिचित कराने का दायित्व हम सभी का है।

सांसद ने दिए महत्वपूर्ण सुझाव

सांसद हरिओम सिंह राठौड़ ने महाराणा प्रताप की स्मृति में मोती मगरी की तर्ज पर राजसमंद की पहाड़ी विकसित करने की योजना बनाने का सुझाव नगरपरिषद को दिया। कहा कि स्मारक में राजसमंद जिले के शहीदों के नाम व तिथि अंकित होनी चाहिए। उन्होंने इस स्मारक व उद्यान निर्माण के लिए नगर परिषद की सराहना की। अंत में सभापति सुरेशचंद्र पालीवाल ने धन्यवाद व आभार ज्ञापित किया।

चतुर कोठारी को 'देवेन्द्र पुरस्कार' से नवाजा

राजसमंद. गांधी सेवा सदन के संस्थापक, स्वतंत्रता सेनानी देवेन्द्र कुमार कर्णावट की पुण्यतिथि पर अणुव्रत सेवी-शिक्षाकर्मी व वरिष्ठ साहित्यकार चतुर कोठारी को ग्यारहवें देवेन्द्र पुरस्कार 2018 से सम्मानित किया गया। उन्हें 21 हजार रुपए नकद, ताम्र प्रशस्ति पत्र भेंट कर शॉल ओढ़ाकर डूंगरसिंह कर्णावट, मधुसूदन व्यास, ललित बड़ोला, गुणसागर कर्णावट व प्रमुख अतिथि कमर मेवाड़ी द्वारा सम्मान किया गया। सम्मान के बाद कोठारी बोले कि देवेन्द्र कुमार कर्णावट तो राजसमंद के गांधी थे। उनके जीवन में सरलता, सहजता, समन्वय परखता, मिलनसारिता, सृजनशीलता, विरोध एवं अपमान के गरल को पीकर पचाने की क्षमता एवं अपनत्वभाव विशेष गुण थे।

समारोह में कमर मेवाड़ी, डूंगरसिंह कर्णावट, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, मधुसूदन व्यास, गुणसागर कर्णावट, लक्ष्मणसिंह कर्णावट, हर्षिता जोशी, ललित बड़ोला ने भी देवेन्द्र कर्णावट के जीवन प्रसंगों व आदर्शों पर प्रकाश डाला। इस दौरान साहित्यकार अफजल खां अफजल, माधव नागदा, एमडी कनेरिया, कमल सांचीहर, गणपत धर्मावत, लोकसेवी डॉ. विजय खिलनानी, कल्याणमल विजयवर्गीय, कालूशाह, मनीष नंदवाना, मदन पालीवाल, गजेन्द्र माली, जगदीश कुमावत, विनय कोठारी, मंजूलता शर्मा, कल्पना कर्णावट, राजकुमार दक, बृजेश वर्मा, आबिद अली आदि थे। कोठारी को देवेन्द्र पुरस्कार सम्मान मिलने पर काव्य गोष्ठी मंच के प्रमोद सनाढ्य, सूर्यप्रकाश दीक्षित, नारायण सिंह राव, चन्द्रशेखर श्रीमाली, शेख अब्दुल हमीद, बंकेश सनाढ्य, धीरेन्द्र शिल्पी, भगवानलाल बंशीवाल भला, दिनेश श्रीमाली, डॉ. आनन्द श्रीवास्तव, सूर्यप्रकाश फ्लेश, गोविन्द सिंह भागावड़, हेमेन्द्रसिंह चौहान, जितेन्द्र सनाढ्य, ज्योत्सना पोखरना, सलीम खां पठान, मनोज लोढा, त्रिलोकीमोहन पुरोहित, डॉ. नरेन्द्र निर्मल, परितोष पालीवाल, डॉ. राकेश तैलंग, राजेन्द्र कुमार राजन, विजय शर्मा, प्रकाश तातेड़, भंवरलाल वागरेच आदि ने हर्ष जताया।

कमर मेवाड़ी को 'प्रकाश जैन लहर' सम्मान

राजसमंद. कथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान जोधपुर द्वारा होटल चन्द्राइन में आयोजित समारोह में वरिष्ठ कवि, कथाकार व सम्बोधन साहित्यिक पत्रिका के सम्पादक रहे कमर मेवाड़ी को 'प्रकाश जैन लहर' सम्मान से अलंकृत किया गया। मेवाड़ी का शॉल ओढ़ाकर श्रीफल व प्रशस्ति पत्र भेंट कर अभिनंदन किया। समारोह में मुख्य अतिथि विख्यात उपन्यासकार विभूति नारायण राय एवं विशिष्ठ कथाकार हरि सुमन बिष्ट, कथादेश के सम्पादक हरिनारायण तथा व्यंग्य लेखक व सम्पादक फारुक आफरीदी थे। अध्यक्षता राजस्थानी भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. अर्जुन देव चारण ने की। समारोह में सम्मान के बाद अतिथियों ने कहा कि कमर मेवाड़ी ने 50 साल तक साहित्यिक पत्रिका सम्बोधन के प्रकाशन नया कीर्तिमान स्थापित किया। संचालन मीठेश निर्मोही ने किया। इस दौरान राजसमंद के शायर शेख अब्दुल हमीद व कवि राधेश्याम सरावगी मसूदिया भी मौजूद थे।

लॉ कॉलेज शुरू, एलएलबी की राह आसान

नाथद्वारा ग्रुफ ऑफ इंस्टीट्यूशन्स का लॉ कॉलेज शुरू, जिला जज ने किया लोकार्पण

नाथद्वारा @ जयवर्द्धन न्यूज. अब वकालत के क्षेत्र में कॅरियर बनाने वाले युवाओं के लिए नाथद्वारा ग्रुफ ऑफ इंस्टीट्यूशन्स द्वारा नाथद्वारा लॉ कॉलेज शुरू किया है। इसका विधिवत लोकार्पण 20 सितम्बर को जिला एवं सेशन न्यायाधीश देवेन्द्र जोशी, एवं पूर्व न्यायाधीश के मुख्य आतिथ्य एवं उप शासन सचिव डॉ. बसंती लाल बाबेल के विशिष्ट आतिथ्य में हुआ। जिला जज जोशी ने नवनिर्मित शिक्षण संस्थान से अपेक्षा व्यक्त की कि वह विद्यार्थियों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर अच्छे अधिवक्ता को तैयार कर समाज एवं राष्ट्र का निर्माण करने में सहयोग करें। डॉ. बाबेल ने कहा कि विधि के क्षेत्र में जो विद्यार्थी अपना कॅरियर बनाना चाहते हैं, उनके लिए यह कॉलेज एक सौगात है। इस अवसर एडीजे बुलाकीदास व्यास, विक्रमसिंह, एससीजेएम लक्ष्मीकांत वैष्णव, नरेन्द्र कुमार, कांग्रेस जिलाध्यक्ष देवकीनन्दन गुर्जर, श्याम राठी, चैयरमेन अशोक पारीख, निदेशक दीपेश पारीख सहित बार एसोसिएशन नाथद्वारा, केलवाडा के अध्यक्ष सहित श्रीनाथजी ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स व नाथद्वारा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के प्राचार्य व प्राध्यापक, लॉ कॉलेज के विद्यार्थी मौजूद थे। अंत में लॉ कॉलेज प्राचार्या डॉ. रचना चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मंडावर में हर पात्र ग्रामीण लाभान्वित हो... मुहिम शुरू

राजसमंद. भीम उपखंड की ग्राम पंचायत मंडावर में हर पात्र ग्रामीण को संबंधित हर योजना लाभान्वित करने के लिहाज से विशेष मुहिम शुरू की गई है। सरपंच प्यारी कुंवर रावत द्वारा चतरपुरा गांव में विशेष शिविर आयोजित किया, जिसमें गांव के लोगों को सूचीबद्ध कर उनकी पात्रता के अनुसार हर योजना से देखा गया। जो भी ग्रामीण जिस किसी योजना का पात्र मिला, उसके लिए हाथोंहाथ आवेदन फार्म तैयार किया गया। इस दौरान ओमप्रकाशसिंह, भाग्यश्री चौहान, समाजसेवी जसवंतसिंह, बूथ अध्यक्ष रणजीत सिंह, राजेन्द्रसिंह, एसएमसी अध्यक्ष लक्ष्मणसिंह, भवानीसिंह डूंगावत, लादूसिंह, लीलादेवी, कर्मसिंह, देवीसिंह आदि थे।

आज ही प्रवेश लें

कम्प्यूटर सीखने का सुनहरा मौका

RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सरकारी नौकरी के लिए एक अनिवार्य योग्यता

सभी सरकारी कर्मचारियों को कोर्स करने पर
100 प्रतिशत फीस रिफंड व 675 रुपए अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि

प्रशिक्षित फैकल्टी द्वारा प्रशिक्षण

Internet	MS Powerpoint	MS-Word	MS-Excel
ई-मेल अकाउंट खोलना	प्रजेंटेशन	बायोडेटा	बिजनेस प्लानर
ई-बुक्स पढ़ना	फोटो एलबम	निमंत्रण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट	हफ्ते के कामो की सूची
विदेशी भाषा सीखना	सर्टिफिकेट	आई कार्ड	पॉकेटमनी प्लानिंग
टिकट बुकिंग	पोस्टर, ग्रीटिंग कार्ड	विज्ञापन/नोटिस	जमा-खर्च
यु ट्यूब पर विडियो देखना	कम्पनी प्रोफाइल	लेटर पेड/ऐनवल्प	टेक्स केलकुलेटर
फोटो का ऑनलाइन स्टोरेज	बिजनेस प्रजेंटेशन	विजिटिंग कार्ड्स	फोन डेटाबेस, डाटा विश्लेषण

राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

New **RS-CIT**
एक परिपूर्ण कम्पयूटर कोर्स

सनशाईन इंस्टीट्यूट

sunshininstitute9@gmail.com

हनुमान नगर, सांयों का खेड़ा मो. 7976752935, 9950084705
ICICI बैंक के पास बस स्टेंड, केलवा मो. 7976752935, 9950084705

कांकरोली के जीवन रक्षक 'गौतम सनाढ्य'

श्री द्वारकाधीश की पावनधरा कांकरोली में जन्मे गौतम सनाढ्य का नाम आज लोग महानायक के रूप में लेते हैं। जोश और जुनून से लबरेज जिन्दादिली इन्सान सनाढ्य का जन्म पिता राधेलाल सनाढ्य और माता कान्ता देवी के प्रथम पुत्र के रूप में 21 जनवरी 1958 को पं. रामचंद्र पण्डिया के घर रेती मौहल्ला (ननिहाल) में हुआ। उनकी मां झुझारू और साहसी थी। कहते जैसी मां होती है, वैसी सन्तान होती है।

पीढ़ी दर पीढ़ी बृजवासी संस्कृति को जीने वाले द्वारकाधीश मंदिर और श्रीनाथजी के साथ सेवा भाव से मेवाड़ में बसे पूर्वज़ो की परम्पराओं का निर्वाह करने वाले सनाढ्य (बृजवासी) समाज ने कई रत्न इस धरा को दिए। जिन्होंने समाज, शहर, मेवाड़ ही नहीं, बल्कि देश का नाम विश्व में गौरवान्वित किया और कर रहे हैं। भक्ति शर्मा, गोविंद दीक्षित, जितेन्द्र सनाढ्य वर्तमान में इसका उदाहरण है ।

उसी सनाढ्य समाज के श्री गौतम सनाढ्य ने 40 से भी ज्यादा राजसमन्द झील से डूबते लोगों की जान बचाई। वो साहसी युवक थे। **माटी का लाल कॉलम में** आज भारत सरकार से जीवन रक्षक पदक से सम्मानित श्री गौतम की बात करते हैं। सनाढ्य का घर राजसमन्द तालाब के किनारे हैं और तैरना क्या होता है, वह नहीं जानते थे। मां हमेशा कहती थी कि जिनका घर तालाब के पास हो, उन्हें तैरना आना चाहिए। तब वह मां की इस बात को समझ नहीं पाते थे। जब वो चार वर्ष के थे, तब उनकी मां उन्हें अपनी साड़ी में बांधकर तालाब में फैंक दिया करती थी और उन्हें तैरना सिखाती थी। प्रारम्भिक तैराकी आपने अपनी मां से ही सिखी थी, लेकिन तैराकी का विधिवत प्रशिक्षण अपने गुरु दामजी सुदाम से दिल्ली के नेशनल स्टेडियम में प्राप्त किया।

श्री गौतम ने 1978 में 5 किलोमीटर की तैराकी रेस जीती। 1980 में राजस्थान चैंपियनशिप प्राप्त की और 1981 में राजसमन्द झील में 12 घंटे निरन्तर तैरने का रिकॉर्ड बनाया। सनाढ्य को जीवन रक्षक पदक से भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने नवाज़ा। राजसमन्द झील में 21 मई 1987 को अहमदाबाद के 9 वर्षीय बालक प्रतीक को बचाया, तब वो झील पर तैराकी प्रशिक्षण देते थे। पर्यटक अहमदाबाद निवासी राजेन्द्र एवं प्रतीक झील में नहा रहे थे। प्रतीक नहाते समय झील में ही रह गया था। 20 मिनट बाद उन्हें पता चला तो वो तत्काल झील में कूद गए और करीब 15 फीट की गहराई से मृत प्राय: नौ वर्षीय प्रतीक को झील से बाहर निकाला। उसे मरा हुआ समझ पेट के नीचे तगारी रख कर उलटा किया और पेट से पानी निकाला और फिर अपने मुंह से प्रतीक को सांस दी, तब उसे होश आया। इसी तरह 21 जून 1987 को अहमदाबाद के ही 22 वर्षीय नीतिन पारीख की लाश को झील से बाहर निकाला। अगस्त 1987 में कांकरोली के तीन बालक तीन सौ मीटर दूर राजसमन्द झील में टूटी फूटी नाव में सैर कर रहे थे, तब नाव में पानी भर गया था। तीनों बच्चे रोने लगे थे। तत्काल गौतम ने तैरते हुए टूटी नाव को पकड़ा और नाव सहित तीनों बालको को जो जीवन मृत्यु के भंवर में फंसे थे, उन्हें बाहर निकाल कर बचाया।

गौतम से जब ये पूछा कि आपको जीवन रक्षक पदक कैसे मिला, तब उन्होंने बताया कि मुझे इसकी जानकारी नहीं थी। जब मैंने चार बच्चों की जान बचाई और एक व्यक्ति की लाश को बाहर निकाला तब तत्कालीन पुलिस अधीक्षक जगमालसिंह जी ने मेरी पीठ थपथपाई और भारत सरकार तक इसकी जानकारी लिखित में पहुंचाई। गौतम के साहसी कार्य करने पर भारत सरकार ने चयनित कर सम्मानित किया।

श्री गौतम कहते थे कि कभी उन्होनें किसी पुरूस्कार के लिए किसी की जान नहीं बचाई। यह तो एक तैराक का फर्ज़ है कि उसके रहते कोई पानी में डूब रहा है, तो वो उसकी जान बचाए। वो कहते थे कि किसी की जान बचाना इबादत से कम नहीं। गौतम की शादी अहमदाबाद निवासी जयश्री सनाढ्य से 16 फरवरी 1989 में हुई। गौतम की जांबाज़ी के कई किस्से मशहूर है। जब तक राजस्थान सरकार ने राजसमन्द झील में मछली का ठेका निरस्त नहीं किया, तब तक गौतम राजसमन्द झील को पवित्र झील घोषित करवाने के लिए संघर्ष करते रहे। उनकी धाक से मछली पकड़ने वाली नाव लेकर कोई मंदिर की तरफ नहीं आता था। कई बार मछली पकड़ने की जालों को ख़ुद की नाव लेकर जाते और झील से निकाल लाते और चौपाटी पर ढ़ेर लगा होलिका दहन की तरह नगरवासियों के सामने जलाते थे, तो सब उनके साहस की प्रशंसा करते थे। एक बार झील में मछली के ज़ाल में फंस के मरी 4 फीट की मछली को चौपाटी पर खंभे पर टांग दिया और विरोध किया। राजसमन्द की जनता उनके साथ खड़ी हो गई और घोषणा कर दी कि अगर सरकार मछली का ठेका निरस्त नहीं करती है, वे अपनी जान दे देंगे।

एक बार तत्कालीन उपराष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा, मंत्री हरी शंकर भाभड़ा और अन्य अधिकारी श्री द्वारिकाधीश मंदिर में दर्शन करने आए, तब मंदिर के दरबार हॉल से सभी को राजसमन्द झील में मछली

पकड़ती 50 नावों को गौतम ने दिखाया और आग्रह किया कि श्री द्वारिकाधीश की पावन नगरी में ये जीव हत्या हो रही। इसे तुरंत बंद कराए और पुष्कर की तरह इसे पवित्र झील घोषित करने की कृपा करें। तब उपराष्ट्रपति ने आश्वासन दिया और तात्कालीन मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत ने 1992 में राजसमन्द को पवित्र झील घोषित कर दी।

गौतम की अगुवाई पर युवाओं ने श्री बालकृष्ण स्टेडियम बनाने की मांग पर तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर की सभा में काले झंडे दिखा विरोध दर्ज करवाया। गौतम ने मुंबई में मफतलाल तरणताल में पांच वर्ष तैराक प्रशिक्षक के पद पर कार्य किया और फिल्म सिटी के कई लोगों को तैरना सिखाया। उनकी रुचि सभी खेलों में थी। जैसे हॉकी, फुटबॉल केरम, कुश्ती, पहलवानी आदि।

परमानंद सनाढ्य (पम्मू दा) भांग वाले और गौतम सनाढय ने राज क्लब की स्थापना की, जिसने राजसमन्द को बेहतरीन क्रिकेट खिलाड़ी दिए। श्री गौतम का कपड़े पहनने का अंदाज़ भी आला था। पठानी सूट हो या पारम्परिक वेशभूषा या गणगौर की सवारी में राजा महाराजा की तरह बण ठण के घोड़े पर बैठना, उनके व्यक्तित्व और कद काठी पर फबता था।

व्यवसाय के क्षेत्र में 1985-86 से गोविंदा, गोविन्दा नाम से मार्बल माईन्स चलाई। गीत, संगीत, साहित्य, नृत्य में भी रूचि रखते थे। सुखपाल भवन के पास पीपल चौक पर सर्वप्रथम नवरात्रि में गरबा

(नटराज गरबा मण्डल) के नाम से आयोजित किया, जो निरन्तर 11 वर्ष तक करते रहे और पूरे नवरात्रा मौन व्रत करते। ईश्वर के प्रति आस्था पीढ़ी दर पीढ़ी ठाकुरजी के सेवा की संस्कार में रची बसी थी। वो स्वभाव से सरल और सहज जैसे अन्तस से थे, वैसे ही बाहर थे। उनकी कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं था। राजसमन्द के हक में आवाज उठाने वाले अराजनैतिक और शहर को बुलन्दी पर देखने वाले व्यक्ति थे।

श्री गौतम को कवि नरोत्तमजी व्यास की कविताएं, कान्हा रे घटी टंचावो और मुकेश का गाया फिल्मी गीत- मैं राम नहीं हूं, फिर क्यों उम्मीद करूं सीता की... बहुत पसंद था। वो इन्हें गाया करते और मित्र मंडली को सुनाया करते थे।

प्रसाद और मिठाई खाने और खिलाने के शौकीन थे। मित्र मण्डली की महफिलो में आनंद लेते थे। वो दामजी सुदाम के शिष्य थे। तब लाल बंगले पर काव्य गोष्ठी भी खूब होती थी। साहित्यकार और गीतकार आदरणीय विश्वेश्वरजी शर्मा गौतम के हाथों से घुटी ठण्डाई छानते थे।

कई रोचक जानकारियां उनके अनुज़ श्री गिरिराज सनाढ्य (गिल्लु दा) ने बताई। विनोद सनाढ्य, नन्दलाल पालीवाल, यशवन्त शर्मा, ओम पुरोहित, प्रदीप पालीवाल, नवीन सनाढ्य, गिरराज़ वैष्णव आदी कई उनके मित्र रहे। मगर कहते हैं कि अच्छे इन्सान की जरूरत भगवान को भी होती है, शायद राजसमन्द का ये लाल युवा अवस्था में कई अधूरें सपने छोड़कर 36 वर्ष की आयु में हृदयघात से 10 मई 1995 को इस संसार को अलविदा कह गया। धीरेन्द्र शिल्पी ने बताया कि अन्तिम समय में वो उनके साथ थे और उनकी बाहों में अपने प्राण त्यागे।

आज भी श्री गौतम राजसमन्द के लोगों के दिलों में जांबाज़ व्यक्तित्व बनकर जिन्दा है। आज भी चर्चा में स्थानीय लोगों के मुंह से सुनने को मिल जाता कि गौतम जैसा इन्सान कोई और होता तो आज राजसमंद कुछ और होता। मुझे तो इस माटी के लाल की स्मृति में मोहम्मद रफ़ी का गाया गीत याद आता है-

मुझको मेरे बाद जमाना ढूंढ़ेंगा...

राजसमन्द की इस महान शख्सियत
को कोटि कोटि नमन।

प्रस्तुति :
सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
मो. 94146-21730

पार्षद बनने में भी नहीं थी रूचि, मगर बन गए सभापति

राजसमंद शहर के प्रथम व्यक्ति, नगरपरिषद **सभापति सुरेश पालीवाल** के साथ जयवर्द्धन का साक्षात्कार। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन से लेकर राजनीतिक सफर के कई रोचक सवालों पर दिए दिलचस्प जवाब। पढ़िए, एक सहज, सरल व्यक्ति किस प्रकार पहुंचा सभापति की कुर्सी तक। इस पर उप **सम्पादक विजय शर्मा** व **सम्पादन सहयोगी हेमेन्द्रसिंह** की खास रिपोर्ट

सवाल 1 : राजनीति में आपका प्रवेश कैसे हुआ और अपने राजनीतिक आदर्श किसको मानते हैं ?

जवाब : राजनीति में मेरे आने की बड़ी दिलचस्प कहानी है। क्योंकि मेरा मूल काम मार्बल से जुड़ा हुआ रहा और जो मेरा मार्बल कटर था, जिसके पास उस वक्त रोड लाइट हुआ करती थी, तो कई बार रोड लाइट खराब हो जाया करती थी। तो स्वत: नगरपरिषद से लाइट वाले प्रतापसिंह जी, ईश्वरजी, सुंदर जी एवं रतनसिंह जी आदि ठीक करने आते थे, तो मैं उनके साथ रहकर मदद करता था। इससे उनसे मित्रता हो गई तो कई बार गली मोहल्ले से लेकर गांव तक की लाइटें भी उनसे ठीक करवा देता। इसी तरह लोगों की अन्य समस्याओं को लेकर उनके निस्तारण के लिए मैं हमेशा सहयोग को तत्पर रहा हूं। क्षेत्र की समस्याओं व लोगों के छोटे मोटे कार्यों के लिए मैं दिवंगत पार्षद जेपी भाईसाब का बहुत ही शुक्रगुजार हूं कि वो मुझे देखते ही मेरा कार्य नगरपरिषद से करवा देते थे और वे जब जीवित थे, तब तक हर कार्य में मेरी मदद करते रहे। एक बार गांव में एक कार्यक्रम में बड़े जनप्रतिनिधियों का स्वागत, सम्मान हो रहा था, तभी एक जने ने मंच से मेरे नाम का एनाउंस करवा दिया और मुझे इकलाई ओढ़ाकर कहा कि सुरेश जी ही असली जनप्रतिनिधि है, जो आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर रहते हैं। इसके बाद जैसे ही नगरपरिषद के चुनाव आए और लोगों ने ही मेरा नाम सुझा दिया व अच्छे अन्तर से लोगों ने जीताकर पार्षद बनाया। मेरे आदर्श अटल बिहारी वाजपेयी है और विधायक किरण माहेश्वरी से भी काफी प्रभावित हूं, जिन्होंने नगरपरिषद के प्रत्येक कार्य में सहयोग कर मुझे मार्गदर्शन प्रदान किया।

सवाल 2 : राजनीति में कोई किसी पद पर पहुंच जाता है, तो उसका सरल रहना मुश्किल हो जाता है। मगर आप इतने सरल है कि मैं आपको कई बार छोटी छोटी बात पर लोगों के बीच पाता हूं, तो यह सरलता लोगों से जुड़ने में कितना लाभ देती है ?

जवाब : यह सरलता मुझे मेरे परिवार से विरासत में मिली है। अभी भी मुझे लगता है कि जब मैं किसी समस्या को लेकर या किसी समस्या के संबंध में लोगों के बीच में जाता हूं, तो समस्या का निराकरण होने में थोड़ी तेजी आती है एवं साथ ही उन चीजों से रूबरू होते हुए समझने में आसानी होती है। इसके अलावा उदाहरण दूं तो जैसे गणगौर का कवि सम्मेलन होता है, तो किसी कवि ने सभापति के लिए पूछा तो मैं वहां लोगों के बीच में बैठा हुआ था। मुझे वहां देख वो बोले की आज के दौर में भी ऐसे राजनेता है। क्या जो लोगो के बीच बैठ कार्यक्रम का आनन्द लेते हैं। मेरी शुरू से ही भावना मिलजुल कर काम करने की रही है और गली, मोहल्ले की तरह आज मैं पूरे शहर के बीच में रहना पसंद करता हूं।

सवाल 3 : इस बार नगरपरिषद राजसमंद के चुनाव के बाद भाजपा में सभापति पद को लेकर काफी उठापटक चली। तो इस समस्त प्रक्रिया के दौरान आपको कभी लगा कि इस बार लक्की ड्रा आपके नाम से खुलने वाला है ?

जवाब : मैं तो इस बार पार्षद का भी चुनाव लड़ना नहीं चाहता था। मेरे राजनीतिक जुड़ाव के कारण मेरे व्यवसाय पर ध्यान नहीं दे पा रहा था, तो इस बार मैंने चुनाव ना लड़ने का फैसला किया था, मगर मेरे साथी और दल दोनों चाहते थे कि मैं चुनाव लडूं। मुझे किसी पद की कोई महत्वकांक्षा नहीं थी। बस लोगों की सेवा करना चाहता था। मगर जब चुनाव के परिणाम आए, तो सभी पदाधिकारियों ने विचार किया और मुझ पर विश्वास जताया तो ये मेरे लिए बहुत जिम्मेदारी और खुशी के पल थे, जिसके लिए मैं अपने साथियों, शुभचिंतकों एवं भाजपा का आभारी हूं। चुनाव के दौरान सभापति के बारे में न कोई विचार था और रहा। एकाएक पार्टी और वरिष्ठ नेताओं ने मुझे सभापति के लिए बताया।

सवाल 4 : सभापति के रूप में इतना बड़ा पद मिलने के बाद व्यक्तिगत जीवन में क्या परिवर्तन आए है ?

जवाब : सभापति बनने के बाद यह परिवर्तन तो आया है कि इस राजसमंद शहर का अपने प्रति प्यार देखकर एक गर्व की अनुभूति होती है। आज शहर के एक छोटे से जावद से सभापति चयनित होता हैं, तो नि:संदेह ना केवल मेरे लिए अपितु मेरे पूरे गांव के लिए खुशी का विषय है। आज यहां के सभी लोग ऐसा महसूस करते हैं कि उनमें से हर एक व्यक्ति सभापति है। क्योंकि उनके बीच के एक आम आदमी को ये अवसर मिला है। मेरी जीवनशैली अभी भी उतनी ही सामान्य है। मेरा परिवार अभी उतना ही सामान्य है, मगर लोगों के इस प्यार से अहसास होता है कि हां मैं किसी अच्छे पद पर हूं। दिनचर्या में खास बदलाव यह आया कि रोज उठकर गोदाम पर जाना और उठते ही घर के कामकाज में लग जाता था, मगर आज उठते ही लोगों, कार्यकर्ताओं के फोन अने लग जाते हैं। घर से निकलने और वापस लौटने का कोई तय समय नहीं रहता। ऑफिस लगभग 11 से 12 बजे तक पहुंच ही जाता हूं।

सवाल 5 : शहरी विकास को लेकर आगामी ऐसी कोई योजना जिसको लेकर आप उत्साहित है ?

जवाब : जिला मुख्यालय पर सोलर ऑटो संचालन नगरपरिषद द्वारा शुरू किया, जिसमें महिला ड्राइवर है, जो किसी भी आपातकालीन स्थिति में फोन करने पर तुरंत उपलब्ध हो जाएगी। साथ ही जिला कलक्ट्री के सामने ऐतिहासिक उद्यान, जहां 100 ऊंचा तिरंगा हमेशा फहराता रहेगा। साथ भारत माता की प्रतिमा, नवग्रह मंच में ग्रह आधारित पौधा व शहीद स्मारक उद्यान यादगार है। अब मेरी बड़ी योजना व ख्वाहिश है कि उदयपुर के फतहसागर की तर्ज पर राजसमंद झील के सिंचाई उद्यान से रोपवे का सिस्टम विकसित करना।

सवाल 6 : शहर में इन दिनों एक नई समस्या देखने को मिल रही है। गायों की समस्या बहुत बड़े पैमाने पर है, तो आपको नहीं लगता है कि नगरपरिषद समाधान में नाकाम साबित हो रही है ?

जवाब : बिल्कुल मेरा भी मानना है कि गायों की समस्या काफी गंभीर हो गई है और उसे आमजन को बहुत ज्यादा परेशानी हो रही है। नगरपरिषद अपनी तरफसे पूरा प्रयास कर रही है, मगर हमारे पास ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है, जिससे तुरंत स्थाई समाधान हो सके। वैसे एक गौशाला के निर्माण का खाका तैयार कर लिया है, मोही मार्ग पर जगह का चयन कर लिया है, जहां जल्द चारा, पानी सरीखी सुविधाएं विकसित की जा रही है। फिर जल्द प्रयास रहेगा कि शहर में घूमती गायों को गौशाला में स्थानांतरित कर दी जाएगी। वैसे, मेरा मानना है कि इस समस्या का सबसे बड़ा दोषी वह है, जो अपने स्वार्थों की पूर्ति के बाद इन गायों को इस तरह से सड़कों पर छोड़ देते हैं। उनसे मेरा हाथ जोड़कर निवेदन है कि अगर आप इन गायों की निस्वार्थ भाव से देखरेख नहीं कर सकते हैं, तो कृपा कर इनको पालना भी बंद करें।

सवाल 7 : गौरव पथ का सुस्त कार्य एक बहुत गंभीर समस्या प्रतीत हो रहा है। गौरव पथ दुर्घटनाओं का या मौत का पथ बनता जा रहा है ?

जवाब : गौरव पथ के सुस्त निर्माण को लेकर सच में बहुत समस्याएं हुई। मैं खुद भी यह मानता हूं कि इसी कारण आमजन को बहुत तकलीफ उठानी पड़ रही और कई बार इसके गंभीर परिणाम सामने आए। हम लोग निरन्तर रूप से इस समस्या के समाधान में लगे हुए थे, मगर कई बार कुछ अलग अलग समस्याओं के कारण कार्य गति नहीं पकड़ पा रहा था। अब यह कार्य वापस प्रारंभ हो चुका है और हमारा पूरा प्रयास है कि जितना जल्दी हो सके, गौरव पथ बनकर तैयार हो जाए और गौरव पथ के माध्यम से राजसमंद में आने वाले हर व्यक्ति का बेहतर स्वागत कर सके और साथ ही दुर्घटनाओं की संभावना भी कम हो जाए।

सवाल 8 : राजसमंद में आपके सभापति बनने के बाद आप सबसे बड़ी उपलब्धियां कौनसी मानते है ?

जवाब : राजसमंद का सभापति बनने से पहले अखबारों में पढ़ता था, जिसमें राजसमंद के विकास को लेकर बड़े- बड़े दावे किए जाते थे एवं प्रयास भी हुए और कई विकास के कार्य भी हुए। फिर भी शहरी जरूरत के कई विकास कार्य नहीं पाए थे, मगर मैंने सभापति बनने के बाद अपना आदर्श गुजरात को बनाया। क्योंकि गुजरात को विकसित होते हुए मैंने अपनी आंखों से देखा था। उसको देखते हुए फिर मैंने अपनी सबसे पहली प्राथमिकताओं में राजसमंद में किसी भी तरफसे प्रवेश करने वालों के लिए चौड़ी सड़कें, खूबसूरत डिवाइडर, अच्छी लाइट एवं व्यवस्थित संकेतक की व्यवस्थाओं के साथ सौंदर्यकरण और शहर में जो मूलभूत समस्याएं हैं, उनके निराकरण को लक्ष्य बनाया। उसी के परिणाम स्वरुप आज हम शहर में कहीं से भी प्रवेश करें, आपको बड़ी लंबी, चौड़ी सड़के दिखेंगी। गौरव पथ के काम पूरे होने के बाद शहर का वास्तविक चेहरा सामेन आएगा। आप देखिए हमने संकेतक, खूबसूरत पेंटिंग्स और लाइटों के सहारे जिला मुख्यालय को जिला मुख्यालय का अहसास दिलाया। उसके बाद राजनगर व कांकरोली दोनों में ही सब्जीमंडी का निर्माण हुआ, तो कई दशकों पुरानी इस समस्या का समाधान हुआ। अमर जवान ज्योति उद्यान के रूप में ऐतिहासिक व खूबसूरत स्मारक बनकर तैयार हो गया है । राजनगर में पहाड़ी पर स्थित री अन्नपूर्णा माताजी मंदिर तक जाने के लिए सुगम सड़क बनाई जा रही है जो जल्द पूर्ण होगी। इसके अतिरिक्त वहां माताजी के आसपास पुरानी ऐतिहासिक इमारतों को सजाने का काम चल रहा है। इसके साथ थोड़े समय में सलूस रोड से होते हुए श्री द्वारकाधीश मंदिर जाने के लिए रिंग रोड प्रस्तावित है, जो ऐतिहासिक भी जल्द शुरू करेंगे।

सवाल 9 : धरातल से लेकर सोशल मीडिया व मीडिया तक कहीं ना कहीं भाजपा से थोड़ी थोड़ी गुटबाजी की खबरें आती रहती है, तो हम ये जानना चाहते है कि राजसमंद के सभापति उस गुटबाजी को किस प्रकार से देखते हैं ?

जवाब : इस सवाल का जवाब मैं अपने परिवार के उदाहरण के साथ देना चाहूंगा कि मेरे परिवार में 14 सदस्य है। मेरी मां के चार बहुए हैं, तो हो सकता है मेरी मां से उनसे कई बार किसी विषय को लेकर थोड़ी बहुत नाराजगी हो जाती होगी, मगर यदि बाहर का कोई व्यक्ति उस नाराजगी का लाभ उठाना चाहे, तो मेरी मां यह कभी होने नहीं देती है। क्योंकि फिर उनके लिए सभी बहुएं बराबर है। उसी प्रकार से ही भाजपा भी एक परिवार है। परिवार में कई बार थोड़ी बहुत नाराजगी हो जाती है, मगर इसका यह मतलब कभी नहीं हो सकता है कि उस नाराजगी का लाभ हमारे विरोधियों को मिले। हमारे परिवार के सभी लोग हमारे भाई हैं, तो हमारा प्रयास रहेगा कि उनकी नाराजगी को समझे और उसको दूर करने का प्रयास करें। ऐसा ही हमेशा होता आया है। सोशल मीडिया भी खबरें विरोधियों द्वारा ही द्वेषता व राजनीतिक फायदे के लिए फैलाई जाती है। जन समस्या व विकास के लिए भाजपा का हर कार्य एक था, एक है और हमेशा एक रहेगा।

सवाल 10 : सभापति के आगे अब अपने राजनीतिक जीवन को किस प्रकार देखते हैं ?

जवाब : यह तो सत्य है कि मेरा तो लक्ष्य सभापति पद भी नहीं था। राजनीति में बिना किसी महत्त्वाकांक्षा के आया और जैसा मैंने पहले बताया कि इस बार तो मेरा पार्षद का चुनाव लड़ने का भी मन नहीं था। फिर भी घर, परिवार, मोहल्ला और मेरे वार्डवासियों के साथ पार्टी द्वारा प्रेरित करने से चुनाव लड़ा। श्री द्वारकाधीश के आशीर्वाद, शहरवासियों

के प्यार और पार्टी के विश्वास के कारण मैं सभापति बना। मेरी कोशिश हमेशा यही रहेगी कि मैं पार्टी द्वारा दी गई जिम्मेदारी व जनता के विश्वास पर खरा उतर सकूं। भविष्य में किसी पद पर रहूं या नहीं रहूं, मगर जनसेवा का दायित्व हमेशा ईमानदारी से निभाता रहूंगा।

सवाल 11 : कभी कभार सुनने में आता है कि नगरपरिषद में अपना कार्य करवाने के लिए भ्रष्टाचार के आरोप लगते हैं। क्या आपने भ्रष्टाचार रोकने की दिशा में कोई कार्य किए है ?

जवाब : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का प्रयास है भ्रष्टाचार मुक्त भारत बने। इस दिशा में मैंने नगरपरिषद के तमाम कार्मिकों को स्पष्ट चेतावनी दे रखी है कि कहीं भी भ्रष्टाचार की शिकायत नहीं मिलनी चाहिए। हमारा प्रयास रहता है कि आमजन का कार्य बिना किसी रूकावट के समय पर होना चाहिए। मेरे कार्यकाल में मुझे कभी कोई भ्रष्टाचार की शिकायत सुनने में नहीं आई।

सवाल 12 : उदयपुर में फतहसागर की तर्ज पर राजसमंद झील किनारे रिंग रोड बनाने की क्या कोई योजना है ? इस दिशा में आपके क्या प्रयास रहे और भविष्य में क्या उम्मीद है ?

जवाब : फतहसागर से राजसमंद झील लगभग चार गुनी बड़ी है। इसके लिए नगरपरिषद द्वारा सर्वे भी कराया, तो झील की परिधि दो करीब 22 किमी. है। इसमें शहर के साथ कुछ ग्राम पंचायतों की सीमा होने एवं वृहद प्रोजेक्ट होने की वजह से इस दिशा में गति नहीं हो पा रही है। फिर भी भविष्य में प्रयास रहेगा कि पर्यटन विभाग, जिला प्रशासन व संबंधित ग्राम पंचायतों के साझा सहयोग से रिंग रोड बनाने के प्रोजेक्ट को साकार रूप दिया जाए।

सवाल 13 : अब हम चाहते हैं कि जयवर्द्धन के माध्यम से हमारे शहर के युवा, शहर के लोग यह भी जानना चाहते हैं कि सभापति महोदय को कौनसे खेलों में रुचि है एवं उसके अतिरिक्त और किस विषय में रुचि रखते हैं ?

जवाब : खेलों के मामले में मुझे फुटबॉल और कबड्डी में बड़ी रुचि रही है और बचपन से ही इन खेलों से जुड़ा रहा हूं। इसके साथ फुटबॉल और हॉकी के बड़े आयोजन हमने जिला मुख्यालय पर करवाए हैं । शुरू से खेल से जुड़ा होने के कारण और सभापति बनने के बाद भी मेरा यह प्रयास रहता है कि राजसमंद की खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करते हुए इन प्रतिभाओं को आगे बढ़ने में मदद कर सकूं। खेल के अलावा अलग रूचि की बात करें, तो मुझे पुराने गाने बहुत पसंद है। आज भी जब भी मौका मिलता है, तो पुराने गानों को सुनने का प्रयास करता हूं। गाड़ी में भी कोशिश करता हूं कि पुराने गाने हमेशा चलते रहे। अच्छे गीत, संगीत सुनने से तनाव से भी राहत मिलती है। इसके अलावा फिल्में देखने का भी थोड़ा बहुत शौक है और अब तो उदयपुर जाने का रास्ता भी आसान हो गया, तो जब भी मौका मिलता है तो कोई न कोई फिल्म देखने का प्रयास करता हूं। वैसे संगीत की बात है, यह तो एक सच यह भी है कि इन दिनों के गानों में शब्दों से कोई जगह शोर ज्यादा हो गया है। कभी पुराने गानों में शब्द ज्यादा होते थे, तो मेरी अभी भी यही उम्मीद है कि एक बार फिर से अच्छे गानों का दौर आए, जिसमें शोर शराबा कम हो और शब्द अच्छे हो। व्यक्तिगत रूप से मुझे किशोर दा और लता जी के गाने बहुत पसंद है।

सवाल 14 : जयवर्द्धन पत्रिका के बारे में क्या विचार है ?

जवाब : मैं जयवर्द्धन हमेशा पढ़ता हूं। इसके हर अंक में नवीनता और रोचकता है। यह राजसमंद के स्थानीय लेखकों को एक मंच प्रदान करती है। जयवर्द्धन देखकर मालूम होता है कि राजसमंद में कई माटी के लाल हुए, जिन्होंने शहर का नाम रोशन किया। मैं जयवर्द्धन के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देता हूं।

लक्ष्मी टिम्बर मार्ट
केसरसिंह दसाणा
9610021624
मीठालाल बोलीवाल
7665410815
ईमारती लकड़ी, सागवान, साल, लाली, कपूर, पाइन,
प्लाईवुड, दरवाजा-फ्लस डोर, सनमाईक इत्यादि के होलसेल के विक्रेता
सोमको टायर के पास, लक्ष्मी कॉलोनी, 100 फीट रोड, जिला-राजसमंद

सविता इंटरनेशनल सैकण्डरी स्कूल, राज्यावास
SAVITA
INTERNATIONAL SCHOOL
गटालिया श्याम नगर, रेलमगरा रोड, राज्यावास (राजसमंद)
कक्षा नर्सरी से दसवीं तक अंग्रेजी माध्यम
अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम
कक्षा नर्सरी से आठवीं तक हिन्दी माध्यम
विशेषताएं :-
● गुणवत्ता युक्त पाठ्यक्रम
● बहु-प्रतिभाशाली अध्यापक/अध्यापिकाओं द्वारा अध्यापन।
● सी.सी. टीवी कवरेज युक्त विद्यालय।
● जीपीएस और सीसीटीवी युक्त स्कूल बसें।
● स्मार्ट क्लासेस
● शनिवार बैग रहित
● बहु-सांस्कृतिक सीखने का वातावरण
● नियमित गतिविधियां ● खेल सुविधाएं।
● शैक्षणिक ग्रीष्म कालीन शिविर
अधिक जानकारी के लिए विद्यालय प्रशासन से सम्पर्क करें।
NARESH TELI
GRADE - A+
PRATIBHA SHARMA
GRADE - A+
MAMTA VAISHNAV
GRADE - A+
MAHESH TELI
GRADE - A+
Call 9929506990, 8875171570
RTE के तहत नर्सरी कक्षा में 25% बच्चों का प्रवेश निःशुल्क

न्यू ग्रीन ढाबा

शुद्ध शाकाहारी

सरदार जगपालसिंह -9571145101, सरदार हरभजनसिंह - 9928904705

नेशल हाइवे 8, पीपरड़ा (भट्टा), जिला-राजसमंद

नारायणलाल गुर्जर
पूर्व सरपंच-पीपरड़ा
मो. 9414172846

नवरात्रा व दीपावली समस्त जिलेवासियों को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

धर्मराज मार्बल

हिरालाल -9414171836 उदयलाल-9414174450

पीपरड़ा भट्टा (राजसमंद)

राम कृष्णा भारत गैस

गणेश पालीवाल
राणा राजसिंह ग्रामीण मण्डल
अध्यक्ष राजसमंद

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.

सुरक्षा सर्वप्रथम, सुरक्षा हरदम

ग्रामीण LPG वितरक, पीपरड़ा

Ph. 02952-290290

M. 7742140601, 8058890541

राम कृष्णा मार्बल आर्ट, बस स्टैंड पीपरड़ा

खेड़ादेवी की आस्था में एकजुट पीपरड़ा

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

पीपरड़ा गांव जहां महाभारतकाल में अज्ञातवास के दौरान पांडव अपनी माता के साथ आए और माता कुन्ती ने पास के फरारा गांव में शिव प्रतिष्ठा की, जिसे आज श्री कुंतेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है। पीपरड़ा गांव के पास एक पहाड़ी है, जिसे चोरमार का मगरा कहते हैं। लोग बताते हैं कि कभी यहां भीम बैठ कर क्षेत्र की निगरानी करता था। पीपरड़ा में कभी रावत जाति के लोग रहते थे, मगर उनके पलायन के बाद चारण आए और वो भी चले गए। फिर धीरे धीरे गुर्जर, राजपूत व पालीवाल ब्राह्मण बस गए। समय गुजरता गया, तो अन्य जातियों के परिवार भी बसते गए। गांव के भील समुदाय के लोग गवरी नृत्य से मनोरंजन करते हैं, जबकि नट परिवार भी अपने करतब दिखाकर मन मोह लेते हैं। खेड़ादेवी का प्राचीन मंदिर यहां प्रसिद्ध है, जहां प्रत्येक रविवार मेले सी यात्रियों की भीड़ लगी रहती है। आवरा माता की तरह मान्यता है कि यहां की बारी से निकलने के बाद बड़ी बड़ी बीमारी में राहत मिल जाती है। पूरा गांव जाति भेद से मुक्त होकर कभी गणेश पूजा, तो कभी दुर्गा पूजा में धूम मचाते हैं।

कुल आबादी 6500, मतदाता 4500

सीमा क्षेत्र व गांव :

पूर्व में खेडाणा, खीमाखेड़ा, पश्चिम दिशा में फरारा, उत्तर में देवथड़ी, सुन्दरचा व दक्षिण दिशा में बडारड़ा गांव स्थित है। पंचायत से राष्ट्रीय राजमार्ग 8 पर उदयपुर-अजमेर व कांकरोली से भीलवाड़ा फोरलेन दो गुजरते हैं।

प्रमुख गांव-ढाणी :

गुर्जर मोहल्ला, सोलंकी मोहल्ला, सोरड़ाई, वैर, भट्टा, देवपुरिया, शंकरपुरा, नया कुआ, गायरियावास, अड़गेला, पोली काकर, जीता, आजाद चौक, ढ़ीकला, जोगी बस्ती, चुंगी नाका।

प्रमुख जातियां :

राजपूतों में चौहान, सोलंकी, भाटी, राठौड़, पालीवाल, खटीक, गमेती, सालवी, लौहार, सेन, टांक, दर्जी, सुथार, कुम्हार, वैष्णव, गायरी, ओड, जाट, गाडोलिया लौहार, तिवारी, रेगर, नट व बागरिया।

मुख्य व्यवसाय व रोजगार :

मार्बल व्यवसाय, मार्बल कटिंग, लोडिंग-अनलोडिंग, गैंगसा पर मजदूरी, खेती, औद्योगिक इकाइयां लगने बाजार विकसित होने से कई लोग स्वरोजगार से आजीविका कमा रहे हैं, जबकि पुलिस, शिक्षक, ग्रामसेवक व अधिवक्ता सहित 30 से 35 राज्य सेवा में कार्मिक है। गांव के हैड कांस्टेबल गमेरसिंह, भगवतसिंह, सुरेन्द्रसिंह, रतनसिंह चौहान है, जबकि प्रथम श्रेणी शिक्षक किशनलाल गुर्जर व द्वितीय श्रेणी शिक्षक जितेंद्र गुर्जर है। नट समुदाय के लोग अक्सर वर्षभर पेट की खातिर पूरे परिवार सहित राजस्थान से लेकर गुजरात, मध्यप्रदेश तक कई राज्यों में भ्रमण करते हैं।

गांव के आस्था स्थल

खेड़ादेवी माता मंदिर, चारभुजानाथ मंदिर, भैरूजी बावजी, ताका श्याम मंदिर, बोवड़िया बावजी, देव डूंगरी, शनि महाराज मंदिर, कालका माता मंदिर व हिंगलाज माता मंदिर प्रमुख आस्था स्थल है। खेड़ादेवी के प्रति आस पास के अन्य ग्रामीणों में खास आस्था है, जिससे बड़ी तादाद में लोग प्रति रविवार यहां दर्शन, पूजा अर्चना के लिए आते हैं।

खारी फीडर बढ़ाता है जल स्तर

राजसमंद झील को भरने वाली खारी फीडर में पानी की आवक होने से क्षेत्र का जल स्तर बढ़ता है। इससे डाबेला, नया तालाब, संकारा, वानी डूमलाई तालाब में पानी भरा रहता है।

गांव की प्रतिभाएं :

मोहनलाल सुखाड़िया युनिवर्सिटी से लक्ष्मण गुर्जर राष्ट्रीय स्तर पर सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता में खेला। सिविलाइजेशन उमावि की छात्रा रविना गुर्जर राष्ट्रीय सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता में खेलकर गांव का नाम रोशन किया।

बड़े कारोबारी :

गांव के नानालाल जैन व रोशनलाल जैन ने मुंबई में ज्वैलरी के कारोबार में नाम कमाया। इसी तरह कन्हैयालाल खटीक ने सूरत में प्रोपर्टी डीलर के रूप में एवं सरकारी-निजी निर्माण कार्यों को लेकर जगदीश टांक ने पहचान बनाई। रोशनलाल जैन व जगदीश ने गांव के विकास में भी खास सहभागिता निभाई।

गांव प्रमुख समाजसेवी :

गणेशलाल टांक, धर्मेश टांक, सुरेश सेन, योगेश पुरोहित, चन्द्रकांत पालीवाल, चंदनसिंह, दिनेश पुरोहित, अनारसिंह, मांगीलाल गुर्जर, महेश पालीवाल, अशोक लौहार, कालूदास वैरागी, गणेश सुथार, महेन्द्र राव, मोहनलाल सालवी, कन्हैयालाल खटीक, गणपत खटीक, भैरूलाल गुर्जर, पुष्कर गुर्जर।

क्या आपने कभी सोचा हैं?
आपके पेम्पलेट को कितने लोग पढ़ते हैं?
कितने सड़क पर बिखरे रहते हैं?
पेम्पलेट
छपवाने की अब जरूरत नहीं।
क्योंकि पेम्पलेट के खर्च में ही
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका
में अपने प्रतिष्ठान का
आप विज्ञापन लगा सकते हैं
सम्पर्क करें 9414239648

पीपरड़ा गांव की हेल्पलाइन

सरपंच : बसंतीदेवी गुर्जर	94141-72846
ग्राम विकास अधिकारी : लालसिंह झाला	94130-20006
पटवारी : धनेश्वर चौधरी	94144-72282
लक्ष्मी ग्राम सेवा सहकारी समिति	
अध्यक्ष, दलपतसिंह चौहान	87695-41689
आदर्श राउमावि पीपरड़ा	
राबाउप्रावि पीपरड़ा	
भास्कर एकेडमी, पीपरड़ा, श्री अर्जुनसिंह चौहान	94143-53770
जीवन ज्योति उमावि पीपरड़ा, श्री राम पालीवाल	94621-91870
सिविलाइजेशन उमावि पीपरड़ा, श्री भैरूलाल गुर्जर	96726-05704
श्री रामकृष्णा भारत गैस एजेंसी पीपरड़ा	02952-290290
गांव के प्रमुख अधिवक्ता	
श्री अतुल पालीवाल, पीपरड़ा	94141-74616
श्री देवेन्द्रसिंह राठौड़, शंकरपुरा	94141-74151
श्री अक्षय पालीवाल, पीपरड़ा	94136-11014
श्री राकेश पालीवाल, पीपरड़ा	94141-74495
श्री हर्षवर्द्धनसिंह राठौड़, शंकरपुरा	
स्वयंसेवी संगठन :	
भाजपा	
श्री गणेश पालीवाल, अध्यक्ष	77421-40601
राणा राजसिंह ग्रामीण मंडल	80588-90541
श्री चन्द्रकांत पालीवाल, पीपरड़ा	
श्री रतनलाल खटीक, पीपरड़ा	99507-74039
श्री गणपतसिंह चदाणा, पीपरड़ा	
श्री अनारसिंह चौहान, पीपरड़ा	
श्री अर्जुनसिंह चौहान, पीपरड़ा	94143-53770
श्री योगेश पुरोहित, पीपरड़ा	94132-86550
श्री राकेश पालीवाल, पीपरड़ा	96803-35042
श्री ख्यालीलाल पालीवाल, पीपरड़ा	96022-09167
श्री मुकेश बागोरा, पीपरड़ा	98297-27045
श्री लीलाधर पालीवाल, पीपरड़ा	98299-38820
श्री केसरसिंह सोलंकी, पीपरड़ा	94140-74947
कांग्रेस	
श्री पुष्कर गुर्जर, पीपरड़ा	85038-45488
श्री भैरूलाल गुर्जर, पीपरड़ा	96109-94884
श्री दिनेश टांक, पीपरड़ा	96021-60375
श्री धर्मनारायण टांक, उप सरपंच	94141-72846
श्री सुरेश सेन, पीपरड़ा	96108-14106
श्री जगदीश सालवी, पीपरड़ा	98876-36446
श्री गणपत खटीक, पीपरड़ा	97994-03489
श्री नारायणलाल गुर्जर, पूर्व सरपंच	94141-72846
श्री पृथ्वीराज गुर्जर, पीपरड़ा	77409-72828
श्री मदन गुर्जर, पीपरड़ा	99502-05248
श्री गोवर्धनलाल गुर्जर, पीपरड़ा	97845-00489
श्री पकंजसिंह कड़ेचा, पीपरड़ा	94141-73249
श्री माधुसिंह सोलंकी, पीपरड़ा	97846-50931
श्री महेन्द्रसिंह पंवार, पीपरड़ा	96945-64041
श्री मोहन सालवी, पीपरड़ा	94608-23053
श्री बद्रीलाल जाट, पीपरड़ा	76655-04028
श्री मदनलाल खटीक, पीपरड़ा	93514-99597
श्री महेन्द्रसिंह पंवार, पीपरड़ा	96945-64041

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

राहु-केतु और मंगल

गांवों में आज भी अधिकतर घरों में बहुत बड़ा आंगन होता है। खुली खुली सी जगह में पालतू पशुओं और घर परिवार का सामूहिक बसेरा होता है। आंगन के बाहर मुख्य दरवाजे की जगह पोल होती है। सुबह की गुनगुनी धूप में आंगन के एक तरफ बुढ़ी दादी मां लटके लटके से चश्मे लगाए बैठी कोई धार्मिक ग्रंथ को पढ़ रही थी। दादी मां की उम्र नब्बे से ऊपर हो गई थी, परन्तु अपने नित्यकर्म और छोटे छोटे काम खुद कर लेती थी। लोग कहते भी थे कि डोकरी में कड़को घणों। उनके सात्विक आचार विचार, खान-पान में ही अच्छे दीर्घायु जीवन का राज था शायद। एक लकड़ी हाथ में रहती थी सहारे के लिए, पर उस पर भी पूरी निर्भरता नहीं थी। दादी मां कब और कैसे पढ़ना सीखी। इस बारे में विस्तृत जानकारी तो नहीं थी किसी को। शायद पढ़ने लिखने की लगन रही होगी।

एक बात कहती थी कि जीवन में पढ़ाई का बहुत महत्व है। विश्वास और अंधविश्वास का अंतर समझ में आ जाता है। आगे कहती- परमेश्वर पर विश्वास रखो, पर अंधविश्वास मन में मत रखो। मन में अंधविश्वास हो, तो परमेश्वर का वास नहीं रहता है।

कबीर भजन माला श्रीमद्भागवत गीता, सुखसागर उनके खास ग्रंथ थे। उनका पढ़ना- लिखना सबके लिए बहुत आश्चर्यजनक और गर्व का विषय रहा था। वो शिक्षा के महत्व को सत्तर वर्ष पहले ही समझ गई थी। जब गांवों में बीस बीस कोस तक प्राथमिक विद्यालय तक नहीं होते थे।

नित्य भजन पाठ करती पर दिखावटी आडम्बर तिलक छापें, अगरबती से दूर दूर तक रिश्ता नहीं था। तभी पोल के द्वार से एक आई आवाज ने सबका ध्यानाकर्षण किया। सफेद झक धोती-कुर्ता, लम्बा तिलक, कन्धे पर लटकता सफेद झोला और हाथ में किसी देवता की फ्रेम जड़ित तस्वीर लिए 'डाकोतिया' खड़ा था। हरि ओम-हरि ओम माते बहुत भाग्यशाली हो। सौ बरस और राज करोगी। पोता पड़पोता खूब सेवा करैला सा।

दादी मां ने उसे पास बुलाने का इशारा किया और बैठने को कहा। दोनों हाथ जोड़ अभिवादन कर वो नीचे बैठ गया और झोले से टिपणा 'पंचांग' बाहर निकाला। एक मनोविज्ञान के तहत ग्रह नक्षत्र के नाम से डराकर धन ऐंठने की मंशा से दादी मां से बात करने लगा।

बेट-बहुएं तो घर के कामों में व्यस्त थे, पर

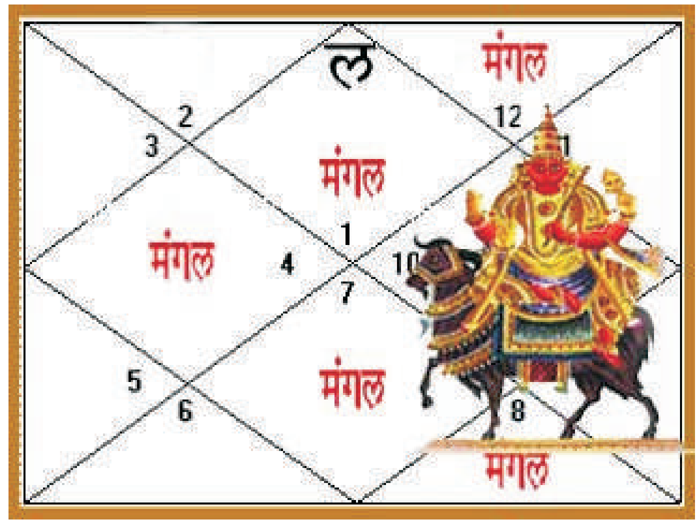

उत्सुकतावश चार पांच पोते-पोती वहां आ गए। दादी मां ने एक पोते को बोला- 'चन्दूड़ा जा रे ऐ पोल बन्द कर आजा।'

चन्दू गया और तुरन्त आज्ञा का पालन कर आया। डाकोतिया से मुख़ातिब होते बोली- 'हां अबे बोल महाराज थारों टिपणों कांई कैवे।'

डाकोतिया बोला- माते, टिपणा में सब ठीक दिखे है, पर थारी बडौड़ी बिनणी थारी सेवा नी करे है। वणी री चोटी में राहु,केतु बैठा है। वणरों माथों खराब रेवे। गुस्सो घणो आवै। थारों मझला बेटा ने लोहो नुखशाण पहुंचाई, गाड़ी- घोड़ाऊं दूर राखजै नितर मौत रो अंदेशो है।

दादी मां बोली- 'महाराज म्हारे छोरा टाबरांऊ घर भरियोड़ो है, सब राजी खुशी रेवे, अस्यो कांई उपाय बतावो।' महाराज मन ही मन खुश हुए- 'अबे फंसी डोकरी'

डाकोतिया बोला- 'शनि, मंगल और राहु, केतु सबरा पूजा पाठ कराणा पड़सी। एक ग्यारह सौ रुपिया रो खर्चो है। एक किलो तेल, कोयला रो टुकड़ो, लोहा रो एक टुकड़ो, एक लाख अगरबती। औ सब दान करणो है। कांसा री थाली में एक गर्म रोटी रखनै तिल्ली रा तेल नै एक धार सूं उणरै ऊपर डालणों है और डाकोत या भील नै जिमाणो है।

टोटको या उपाय जो भी था, जोरदार था। पोपले मुंह से मुस्कराती दादी मां उठी और जाकर रसोई से कांसा की थाली में रख एक गर्म रोटी ले आई। घाणी का तेल, कोयला, लोहे का टुकड़ा, एक लाख का टूकड़ा और एक अगरबती चन्दू ले आया। डाकोतिया ने एक लाख अगरबतियां मांगी थी।

मात्र
150/-
में सालभर आएगी
जयवर्द्धन
आज ही कॉल कर बुक
कराएं प्रति :
94142-39648

दादी होशियार निकली। उसने लाख का एक टुकड़ा और एक अगरबतीयों का छोटा पैकेट पकड़ा दिया और बोली– 'लैरे थारी एक लाख और अगरबत्तियां'। डाकोतिया का सिर घुम गया। दादी मां की होशियारी देख।

अब दादी मां ने अपने मंझले बेटे और पोतों को बोला कि महाराज के आस पास खड़े हो जाओ। आदेश की पालना हुई। महाराज के सामने कांसा की थाली गर्म रोटी रख घाणी के तिल्ली के तेल की धार डाली गई। डाकोतिया देखता रहा और थाली तेल से पूरी भर गई। अब डाकोतिया को आदेश मिला कि 'बेटा म्हूं कठै भील– बामण खोजती फरूं। तू ही तेल पी जा और रोटी खा ले।'

डाकोतिया को तो मानो काटो तो खून नहीं। मरता क्या नहीं करता। मंझला बेटा हाथ में लट्ठ लिए खड़ा बड़ा खूंखार लग रहा था। चन्दूड़ा, मोहनिया, लाल्या, खींमा सबके सब छाती पर खड़े थे। अब डाकोतिया की ग्रह दशा बिगड़ती दिख रही थी। पहले डरते-डरते पूरा कोयला खाया। फिर आधा पौण किलो तिल्ली का तेल पीना पड़ा। तेल में भीगी रोटी तो गले में ऐसे उतर रही थी, मानो रस्सी निगलनी पड़ रही हो। सारे शनि, मंगल, राहु, केतु शांत हो गए।

बड़ी दयनीयता से दादी मां को देखता डाकोतिया अब जाने की आज्ञा मांगने लगा। पोल खुलते ही सर पर पांव रख सरपट भागा तो पीछे मुड़कर नहीं देखा। दादी मां ने शिक्षा के महत्व को दिखाते, सबको जिन्दगी की सीख दे दी। मनुष्य योनी प्रारब्ध से मिलती है। दु:ख सुख जीवन के हिस्से है। शनि बूरा है, ना मंगल खराब। राहु से डरो ना केतु का भय रखो। नेक नियती रखते हुए सत्कर्म करो। अंधविश्वास से दूर रहो।

नोट : डाकोत एक जाति होती है, जो शनि देव उपासक होती है तथा ज्योतिषी कार्य 'टिपणा बाचणें का कार्य' कर उससे प्राप्त धन से जीवन यापन करती है।

गोविंदसिंह चौहान,
भागावड़, भीम

सात जनमां रौ करज

'देवलो' दसेक वरस रो हो ने वणी रा माऊ बाप परा मर्‌या। वणी रै खावा खेलवा ने भणवा री वात तो छेटी, पेट भरवा राई फोड़ा पड़ी ग्या। देवला ने वणी रे काके मनख देखाऊ आंपणे अठे राखी लीदो। व्हौ जाणतो हो के रोट्यां हाठै हाळी खोटो कोनी। गाम रा दूजा टाबरां ने रमता देखतो तो देवलो छाने-छाने रोवतो। काको वणी ने केवतो के म्हारे अठै थुं मजूरी करेला तो म्हूं थारो व्याव कराई दूंला। म्हारे सिवा अबै थने परणावा वाळो कोई कोनी है।

देवलो दन रात हाड़ तोड़ मेणत करतो ने काका- काकी ने राजी राखतौ। सात वरस देवले वठै मजूरी कीदी, पछै काके वणी रौ व्याव करायौ ने बोल्यो- थारे व्याव रौ खरचो सतरा हजार रिप्या व्यौ है। अबै थें दोई मनख म्हारे अठै मजूरी करी ने ओ करजो उतारो, ने न्यारा रेवणां चावौ तो थांरौ मोटको खेत म्हारे गेणे मांडी दो।

गाम में भेराबा अश्या मनख हा जे कणी रोई खोटो कोनी चावता। वणां कतराई ठाला-भूला मनखां ने कमाई रा गेला वताई ने खावा कमावा जोगा वणाया। गाम में वणां री घणी कदर ही। व्हे जाणता हा के देवला रौ काको घणौ कागोरी (चालाक) है। वणां देवला ने घरपेटु समझायो के थें काका रे हाळी रेइन करजो कोनी उतार सकोला। थांरे खेतां में मजूरी करो ने दो पईसा कमावौ तो करजो परो उतरेला। देवला ने भेराबा री वात आसे आई गी। वणी काका रै एक खेत गेणे मांडी दीदो। पछै मेणत मजूरी करी ने गाड़ी बळद लेई लीदा। देवला री लुगाई देवलाऊं ज्यादा मेणती ही।

एक दन जेठ रा पपता तावड़ा में आखौ दन खेतां में खाद नाकवा रौ काम करी रिया हा। हांझ वेतां खाद री गाड़ी खेत में खाली करीन पाछा घरां आवती दांण बळद औथी ग्या ने गाड़ी लेइन दोड़वा लाग्या। देवले बळदा री नाथां घणी खेंची पण बळद ढबवा रो नाम तक नी लीदो। वणी जोर जोरूं हाका कीदा के बळद औथी ग्या है, गेलाऊं छेटी रिज्यौ। छेटी रिज्यौ...।

दूजा मनख तो देवला रौ हेलो हुणीन टलग्या पण चतरा री लुगाई ने वेणी रो टाबर गेला वच्चे चालताईज रिया। बाळक बळदा रै पगां में आई ग्यौ। ने वणी रो हाथ टूट रै परौ। देवला रे काके चतरा ने भड़कायो के थूं गाम में पंच भेळा करीने टाबर रे ऐलाज रौ खरचो देवला सूं लेई लें। चतरा रै आ वात सतरै आना आसे आई गी।

पंचां न्याय कीदो के देवलो टाबर रै ऐलाज खातर चतरा ने सात हजार रिप्या देवे। नी देई सके तो जात बारणे रेवेला। आ वात हुणतांई नै देवला ने तो रोवणो आई ग्यो। काको बोल्यो- थूं होच मती कर, म्हूं थनै जात बारणे कोनी वेवा दूं। रिप्या म्हूं गणी देऊंला, पण थारा गाड़ी बळद म्हारे गेणे मांडणा पड़ेला। भरो बा ने ठा पड़ी के पंचां देवला रे सागे अन्याव कीदो है। वणां कियो- थूं घबराव मती काले पंच पाछा भेळा करां ने न्याव करावां। पण थने एक काम करणे पड़ै। वठै म्हूं थनै ज्या वात पुछूं हांची वताई दीजे। पछै गूंगो वेई ने बैठोईज रीजै। दूजा कई वात पूछै तो थूं बोलजे मती। मने ठा है कि लुगायां घणी दांण छानी मानी कोनी बेई सके। म्हूं जाणुं चतरा री लुगाई तो जिबाळू है। कई न कई भूंडी वात केवेलाइज। भगवान घणो दयालु अर हांचा मनखा रो हेतालु है।

दूजे दन गाम रा चंवरा माथे पंच पाछा भेळा विया। भेरा बा देवला ने पूछियो- जदी थारा बळद औथी ग्या तो मनखां ने चेतायो क्यूं नी? देवलो बोल्यो के म्हे तो घणां जोर जोरू सूं हाका कीदा पण चतरा री लुगाई ऐंठ करीन टाबर रौ हाथ पकड़ीन गेला वच्चे चालती री। बळद तो बापणा जनावर हा पण ऐ तो मनख हां, म्हूं औजू कई करतो ?

आ वात केईन देवलो गूंगो वेई ने बैठी ग्यो। चंवरा पे दूजा पंचा घणी दांण पूछी, पण देवलो तो टसू मस नी वियो। देवला री असी गत देखीन चतरा री लुगाई ने रीस आव रे परी। व्हा बोली- वणी दांण तो थूं बाको फाड़ीन हाका करी रियो हो के बळद औथी ग्या है, गलाऊ छेटी रिज्यौ, छेटी रिज्यौ... ने अबे कई वात वेई गी है? अबे कई थारौ मुंडो परो भागो है ?बोले कोनी रियो है थूं ?

भेरा बां जश्यो चावता, वेई ग्यो। व्हे बोल्या- अबे पंच ओजू कांई जाणनो चावे? चतरा री लुगाई आपणां मुंडा सूं केई री है के देवले वणी दांण घणा हाका कीदा हा। पछै देवला री खोट कठे है? अबे दूजा पंच बोल्या- तो जदी देवलो रिप्या कणी वात रा देवे? अणी री कई खोट कोनी। पंचात वखर गी। देवलो ने देवला री लुगाई भेरा बा रै पगां पड्या ने हाथ जोड़ीन बोल्या- काका रो करजो तो म्हां रिप्या कमाईन परो उताराला, पण थांरौ करज तो म्हां सात जनम कोनी उतार सका।

जवानसिंह सिसोदिया
राजस्थानी रचनाकार
आरटीडीसी होटल के पीछे, नाथद्वारा

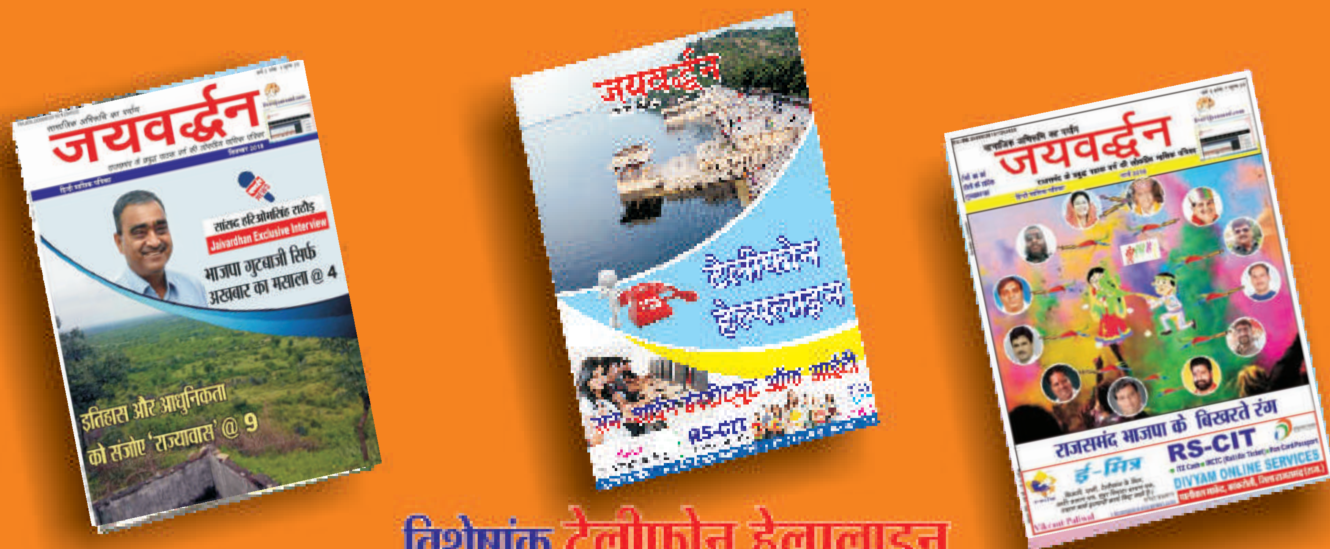

विशेषांक टेलीफोन हेल्पलाइन

मात्र 50 रुपए में प्राप्त करें।

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती..

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	90	150 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

विशेष छूट के साथ मासिक पत्रिका की वार्षिक बुकिंग मात्र 150 रुपए में

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

झील के जज़्बात

राजसमंद झील नाम है मेरा,
जल-जीवन देना काम है मेरा।
बीते दिनों की याद में जब भी खोती हूं मैं,
अपनों को बेपरवाह देखकर रोती हूं मैं।
अरावली-पहाड़ियों पर हरे-भरे दरख्त थे,
भाव-भरे थे दिल इन्सां इतने सख्त थे।
संगमरमर के लिए जब से खोदी गई खानें,
रोजगार के नाम पे खूब लगे कारखाने।
मुझसे बेपरवाह चन्द लोगों का हुआ विकास
बड़ी बेरहमी से मगर मेरा तो हुआ विनाश
अवरुद्ध हैं जो नाले ही नहीं, न ही केवल जल प्रवाह
अवरुद्ध हैं शिराएं मेरी, रूका है मेरा रक्त प्रवाह
हर गड्ढा, छेद है मेरी छाती में, सफेद जहर आ मिला है पानी में
मां ने तुम्हारी जन्म दिया तुम्हें, और में देती हूं जीवन तुम्हें।
चन्द महीनों पीया है तुमने दूध अपनी मां का,
हर रोज देती हूं मैं तुम्हें जल अपने आंचल का।
क्या तुम मां को रुलाते हो, फिर क्यों अपना फर्ज भुलाते हो।
सुनो! हे खुदा के बंदों, और हरि के जनो!
फेंक कर मुझमें गंदगी कैसे करते हो खुदा की बन्दगी,
पानी को प्रदूषित करके स्वस्थ कैसे रहेगी जिन्दगी।
यों तो खूब लिखा गया मुझ पर, रचनाओं को हासिल हुए इनाम
अफसोस मगर इनसे, मेरे लिए हुआ नहीं कुछ काम।
बेपरवाही पर कुछ शर्म करो, मिल जुलकर कुछ कर्म करों।
अब काम न चलाओ बातों से, कुछ कर डालो अपने हाथों से।
तनिक जो भी हुआ है प्रयास, देखकर जगी है फिर जीने की आस।
कोशिशें चढ़ रही है परवान, लौट रही है मेरी मुस्कान।।

साभार :
टीकम बोहरा 'अनजाना'
की पुस्तक माँ से प्यारा नाम नहीं (कविता संग्रह) से

गांधीजी

स्वतंत्रता की चलाई आंधी, नाम था उसका मोहन गांधी
जनता की उसने बनाई कुमक, दांडी से उसने उठाया नमक
कस्तूरबा से करवाया श्रम, अहमदाबाद में बनाया आश्रम
बचपन में चबाए चने, इंग्लैंड जाकर बेरी स्टार बने
स्वतंत्रता की ज्योति जलाई, हिंदुस्तान को आजादी दिलाई
अंग्रेज को दिखलाया डंडा, फहराया राष्ट्र का पताका
अंग्रेज ने जब करवाई हिंसा, गांधीजी ने अपनाई अहिंसा
अहिंसा का नारा लगवाया, भारतीयों को खादी पहनाया
अछूतो को बनाया परिजन, नाम अनुपम दिया मेरे हरि जन
बापू बन गया उसका नाम, किया जो उसने देश का नाम
खिल उठा धरती और गगन, गुलाब चंद करते हैं उनको नमन

गुलाब चंद पटेल
लेखक, नशा मुक्ति अभियान प्रणेता
गुजरात गांधीनगर, मो. 09904480753

गज़ल

सीधा चलता नज़र नहीं आता, वो संभलता नज़र नहीं आता।
लोग कहते हैं मोमदिल है वो, पर पिघलता नज़र नहीं आता।
वो हवा है, हवा का क्या विश्वास, रूख बदलता नज़र नहीं आता।
दिल पे लगते ही टीस उठती है, तीर चलता नज़र नहीं आता।
बात करता है अमने आलम की, घर दहलता नज़र नहीं आता।
मेरे हर सच को झूठ कहता है, वो बहलता नज़र नहीं आता।
इतने नादां तो वो नहीं कि उन्हें, दिल मचलता नज़र नहीं आता।
यूं तो रग-रग में दौड़ता है वो, पर उबलता नज़र नहीं आता।
नफ़रतों, बुग्ज़ो- बेईमानी का, सूर्य ढलता नज़र नहीं आता।
साया बनकर है साथ साथ हमीद अब वो टलता नज़र नहीं आता।
उसने भेजा जो गुल खुशनुमा प्यार का,
तब भी समझा न मैं फ़लसफ़ा प्यार का
चाहता कौन था ये मुसीबत मगर, हो गया एक दिन हादसा प्यार का।
मैंने जी भरकर जीने की कोशिश भी की,
एक पल जो मयस्सर हुआ प्यार का
ज़ख्म दिल के मेरे फिर हरे हो गए,
जब मिला एक खत गुमशुदा प्यार का।
हर तरफ़ नफ़रतों का है पथराव सा, किस तरह बचे आईना प्यार का।
बाज़ आ जाए पंदो नसीहत से तू, नासेहा ज़ख्म खा इक ज़रा प्यार का।
अब तबस्सुम नहीं, अश्के ग़म ही सही,
मिल गया कुछ न कुछ तो सिला प्यार का
ख़ूने-दिल से किया जिसको रोशन हमीद,
बुझ गया एक दिन वो दिया प्यार का।

शेख अब्दुल हमीद
गजलकार, संतोषीनगर कांकरोली

अर्थ : मयस्सर- आसानी से प्राप्त, बाज़- विमुख, नासेह - उपदेशक, सिला- इनाम पंदो- नसीहत

अटल नाम का ध्रुवतारा

हवा खामोश, धरा भी चुप है, अंबर शांत
चिर निद्रा में लीन हो गया अटल नाम का ध्रुवतारा।।
करम मिलाकर चलना होगा, ध्येय बताया था जिसने।
कांटे चाहे मिले राह में, ठानी थी मन में उसने।
देशहित सर्वस्व लुटाकर, निजी स्वार्थ को किया किनारा।
चिर निद्रा में लीन हो गया अटल नाम का ध्रुवतारा।।

अटल कहे क्या बातें तेरी, सूरज को दिखलाना दीपक है।
सागर को गागर में भरना, बोलो कितना हास्यास्पद है।
राजनीति की महाविभूति, सर्वोपरि रखा देश हमारा।
चिर निद्रा में लीन हो गया अटल नाम का ध्रुवतारा।।

था कवि सरल हृदय का, शानदार था वक्ता।
लाजवाब हाजिर जवाबी, नेताओं का प्रवक्ता।
थामी बागडोर देश की, कर्तव्यों को सदा निभाया।
चिर निद्रा में लीन हो गया अटल नाम का ध्रुवतारा।।

ज्योत्सना पोखरना
कवि, साहित्यकार, कांकरोली

चारभुजा में जलझूलनी का लक्खी मेला

जलझूलनी एकादशी पर प्रतिवर्ष राजसमंद के गढबोर में चारभुजानाथ का भव्य मेला भरता है। मेले में उदयपुर, पाली, भीलवाड़ा के अलावा मध्यप्रदेश से भी हजारों लोग आते हैं। यह माहेश्वरी समुदाय की खास आस्था स्थल है। गुलाल-अबीर उड़ाते हुए ठाठ बाट से सोने के बेवाण में ठाकुरजी को दूध तलाई ले जाकर स्नान कराने की खास परंपरा है। फिर चांदी के बेबाण में ठाकुरजी का विग्रह पुनः मंदिर पहुंचता है। चारभुजानाथ के दर्शनों के लिए आधा आधा किमी. तक लोगों की कतार लगी रहती है। मेले में आने वाला हर शख्स गुलालमय हो जाता है और एक दूजे को पहचाना भी मुश्किल रहता है। यह मेला देवस्थान विभाग की ओर से आयोजित किया जाता है। यहां गुर्जर समुदाय के लोग पूजा अर्चना करते हैं और प्रति परिवार की बारी 5 से 25 वर्षों बाद आती है, जो करीब एक माह तक पूजा करते हैं। बढ़ती पर्यटकों की तादाद के मुकाबले चारभुजा का समग्र विकास नहीं हो पाया।

नारायणसिंह भाटी के सितारें बुलंद, बन सकते हैं विधायक

विधानसभा चुनाव :क्या डेढ़ दशक से जमी भाजपा को हरा पाएगी कांग्रेस!

आखिर क्या है खूबियां, जिसके आधार पर जीत सकते हैं भाटी ? क्या है राजसमंद के समग्र विकास का चुनावी एजेंडा ?

... कुछ ऐसे ही रोचक सवालों के जवाब नारायणसिंह भाटी की जुबानी

सवाल : किस तरह आपका राजनीतिक सफर प्रारंभ हुआ और वर्तमान में आप कांग्रेस से विधायक के प्रबल दावेदार माने जा रहे हैं। किस आधार पर जनता आपको चुनेगी ?

जवाब : मेरे पिता देवीसिंह भाटी राज्यावास पंचायत में लगातार 30 वर्षों तक सरपंच रहे। फिर पंचायत समिति राजसमंद में उप प्रधान व प्रधान पद पर रहते हुए जनसेवा की। मेरा राजनीतिक कॅरियर स्कूल में खेलमंत्री से विद्यालय अध्यक्ष, भूपाल नोबल्स कॉलेज उदयपुर में अध्यक्ष का चुनाव लड़ने से लेकर ग्राम सेवा सहकारी समिति राज्यावास का अध्यक्ष बनने का मौका मिला, जिसे मैं आज तक निभा रहा हूं। कांग्रेस से मैं दो बार जिला परिषद सदस्य और एक बार जिला प्रमुख बनकर जनसेवा की। मुझे कांग्रेस जिलाध्यक्ष का मौका मिला, जिससे संगठन को मजबूती प्रदान की और उसी बदोलत आज राजसमंद विधानसभा नहीं, बल्कि पूरे जिले के लोग मेरी कार्यशैली व मेरे कामकाज से वाकिफ है। अब तक के कॅरियर में जन उम्मीदों पर हमेशा खरा उतरा हूं। इसी आधार पर मुझे टिकट मिलेगा और जनता मुझे चुनेगी।

सवाल : आम तौर पर विधायक चुने जाने के बाद जनता की पहुंच से बाहर हो जाते हैं, मगर आप सहज व्यक्तित्व के धनी है, तो आपके विधायक बनने के बाद कुछ परिवर्तन आएगा ?

जवाब : राजनीतिक कॅरियर तो तीन से चार दशक का है, मगर मैंने हमेशा जनसेवक बनकर कार्य किया है। मैं कुशल जनप्रतिनिधित्व व जननायक का परिचय देते हुए जन समस्या के लिए सदैव लड़ा हूं और लड़ता रहूंगा। चाहे कोई पद रहे या ना रहे, मैं एक जनसेवक था, हूं और हमेशा जनसेवक रहूंगा। अब तक मैंने न सिर्फ जनता की समस्या सुनी, बल्कि हर समस्या का निस्तारण भी करवाया। मैं गांव का जमीन से जुड़ा व्यक्ति हूं और हमेशा इसी तरह आम जनता से जुड़ा रहूंगा। मुझमे कभी कोई परिवर्तन नहीं मिलेगा।

सवाल : राजसमंद का दुर्भाग्य रहा कि अधिकतर बाहरी विधायक बने। स्थानीय को अनुभवहीन को ही मौका मिला, जिससे राजसमंद की बेहतर विकास नहीं हो सका। इसे आप किस तरह देखते हैं ?

जवाब : आपका कहना बिल्कुल सही है, स्थानीय योग्य व्यक्ति नहीं चुनने के कारण राजसमंद की जमीनी हकीकत से बेखबर बाहरी विधायक सिर्फ अपने निकटतम लोगों की ही समस्याएं सुन पाते हैं। बाहरी विधायक का यहां की मिट्टी से आत्मिक जुड़ाव नहीं होने से यहां के समग्र विकास के प्रति सक्रिय नहीं रहते हैं। अगर स्थानीय विधायक हो, तो पहले से मूलभुत आवश्यकताओं से वाकिफ होता है, जिससे न सिर्फ प्राथमिक समस्याओं का स्वत: समाधान हो जाता है, बल्कि विकास की दिशा में ठोस कार्य कर पाता है।

सवाल : वर्तमान में कांग्रेस के कार्यकर्ता से लेकर वरिष्ठ नेता तक गुटबाजी में बंटे हुए हैं। चुनाव में सभी को एक मंच पर लाना आपके लिए चुनौतीभरा होगा। ऐसे में आप किस प्रकार आश्वस्त है ?

जवाब : जब कांग्रेस प्रदेश नेतृत्व द्वारा मुझे जिलाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई थी, तब भी कार्यकर्ता कुछ गुट में बंटे हुए थे। मैंने आम कार्यकर्ता से राय मशविरा करते हुए अलग अलग गुटों में बंटे पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं को एक मंच पर बिठाया और उन्हें पार्टी की आचार संहिता में रहते हुए जनसेवा का जज्बा जगाया। उस दौरान हर कार्यकर्ता ने यह महसूस भी किया। उसी का परिणाम रहा कि सन् 1995 आज तक प्रदेश कमेटी के निर्देश पर होने वाली बैठक, सम्मेलन या धरना सरीखे हर आयोजन सफल रहे। मेरे प्रति कार्यकर्ताओं का प्रेम और विश्वास के आधार पर ही पार्टी मजबूत होकर पुन: विरोधियों को मात देने में सक्षम होगी। मेरे प्रति कार्यकर्ता का विश्वास ही मेरी पूंजी है।

सवाल : हमेशा यह आम चर्चा है कि राजसमंद में भाजपा को अगर कोई मात दे सकता है, तो वह नारायणसिंह भाटी है, मगर पिछले दो चुनावों में पार्टी नेतृत्व ने टिकट नहीं दिया। क्या नेतृत्व आपके प्रति आश्वस्त नहीं था। इसमें आपका क्या कहना है ?

जवाब : कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों के विश्वास को देखते हुए ही मैंने पूर्व में भी टिकट के लिए दावेदारी की, मगर नेतृत्व ने किसी कारण से टिकट नहीं मिला। जिसकी मुझे कोई शिकायत नहीं है। इस बार मैं आश्वस्त हूं कि मुझे टिकट दिया जाएगा और जनता के प्रेम व विश्वास के बलबूते पर 15 साल से जमीं भाजपा को हम निश्चित ही हटाने में कामयाब होंगे।

सवाल : राजनीति के साथ सामाजिक कार्यों में सहभागिता रही है। इसको लेकर आपके क्या अनुभव है ?

जवाब : जैसा मैंने पहले भी कहा, मैं जनसेवक हूं और हमेशा ही रहूंगा। मेरे गांव राज्यावास की ग्राम सेवा सहकारी समिति में 1991 से लगातार 28 वर्षों से अध्यक्ष हूं। यह जनसेवा का ही परिणाम है। इसमें कोई राजनीति नहीं। राजपूत समाजोत्थान के लिए मेवाड़ क्षत्रिय महासभा से भी जुड़ा हुआ हूं, जिसमें राजसमंद महासचिव तक की जिम्मेदारी मिली। शैक्षिक दृष्टि से विद्या प्रचारिणी सभा बीएन उदयपुर का सदस्य होकर आज तक शैक्षिक सेवा दृष्टि से भी जुड़ा हुआ हूं।

सवाल : जिला परिषद के तत्कालीन जिला प्रमुख नरेन्द्रसिंह सोलंकी के निधन पर उप चुनाव हुए, जिसमें भाजपा का पूर्ण बहुमत होते हुए भी आप जिला प्रमुख बने। यह अत्याशित परिणाम कैसे संभव हुआ ?

जवाब : सहज, सरल व्यक्तित्व व नेतृत्व क्षमता की बदौलत ही आमजन का मेरे प्रति प्रेम और विश्वास बना रहता है। भाजपा के कई सदस्यों का भी मेरे प्रति ऐसा ही विश्वास होने की वजह से यह संभव हो पाया कि भाजपा उसी के गढ़ (घर) में हार गई और मैं जिला प्रमुख बना। पहली बार 2000 में रेलमगरा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी को हराकर जिला परिषद सदस्य पर जीत दर्ज की। फिर 2005 में भाजपा प्रत्याशी भवानीशंकर पालीवाल (भानु दा) को भारी मतों से मात देकर जिला परिषद में प्रतिपक्ष नेता बनने का गौरव मिला। जिला परिषद में जन समस्याओं को प्रमुखता से उठाया और हर मुद्दे पर तर्कसंगत पैरवी से भाजपा के जिला प्रमुख को अमल करने के लिए मजबूर किया। इसी विश्वास के चलते जिला प्रमुख नरेंद्रसिंह सोलंकी के निधन के बाद भाजपा का पूर्ण बहुमत होते हुए भी भाजपा सदस्यों ने मुझे वोट देकर जिला प्रमुख बनाया।

कांग्रेस के नारायणसिंह भाटी को कांग्रेस से टिकट मिलने व जीत के लिए चारभुजा पदयात्रा पर जाते समर्थक।

सवाल : उच्च शिक्षा मंत्री एवं राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी भाजपा की मजबूत दावेदार मानी जाती है। लम्बे समय से इस सीट पर काबिज है। ऐसे में आप किस तरह से जीत हासिल कर पाएंगे ?

जवाब : किरण माहेश्वरी उच्च शिक्षा मंत्री व पूर्व में जलदाय मंत्री भी रही हैं, मगर दोनों ही क्षेत्र में राजसमंद उपेक्षित रहा। उच्च शिक्षा मंत्री रहने के बावजूद राजसमंद की ये स्थिति है कि वर्तमान में सारे महाविद्यालयों में 80 फीसदी व्याख्याता के पद रिक्त चल रहे हैं। पूर्व में जलदाय मंत्री रहने के बावजूद राजसमंद झील के लिए कोई कार्य नहीं हुआ। सिर्फ राजसमंद झील को चुनर ओढ़ाने से पानी नहीं आ जाता। इस तरह हर क्षेत्र के कार्यों में यह विधायक असफल रही हैं। इन्हीं नाकामियों की वजह से जनता खफा है। मैं जन्म से इस क्षेत्र से जुड़ा हुआ हूं। यहां की प्रमुख समस्या, जरूरतों पर प्रयास करता रहा हूं। जब जब मुझे मौका मिला, तब तब मैंने क्षेत्र के विकास के लिए कार्य करके दिखाया है। इसलिए राजसमंद की जनता का मुझ पर पूर्ण विश्वास है और निश्चित ही हम जीत हासिल करेंगे।

कांग्रेस से दावेदारी के दौरान गांवों में जनसंपर्क के दौरान नारायणसिंह भाटी का स्वागत करते ग्रामीण।

सवाल : बीते 15 वर्षों से राजसमंद सीट पर भाजपा के विधायक रहे। इस दौरान राजसमंद का क्या विकास हुआ। आप इसे किस तरह देखते हैं ?

जवाब : इन पन्द्रह वर्षों में मुझे कोई बड़ा कार्य दिखाई नहीं देता। राजसमंद के दोनों तरफ फोरलेन का जो बड़ा कार्य हुआ है, वह भी डॉ. सीपी जोशी की बदौलत हुआ। सिर्फ राजसमंद की नगरपरिषद द्वारा कराए गए छोटे मोटे कार्यों की शिला पट्टिका पर विधायक का नाम दर्ज करवाना विकास की परिभाषा नहीं है। राजसमंद झील की भराव क्षमता बढ़ाने के लिए खारी फीडर को चौड़ा करने का कार्य इन वर्षों में कागजों तक सीमित रहा। वहीं माही डेम व देवास परियोजना से झील तक पानी लाने का सिर्फ झुन्झुना बताया गया। राजसमंद की जनता यह निश्चित रूप से देख रही है और इसका जवाब इस बार के विधानसभा चुनाव में वोट से देगी।

नवरात्रा व दीपावली समस्त जिलेवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

MEN'S WEAR EX-CLASSIC
The Cloth Shop

कोणार्क शोरूम

राजकुमार खत्री-9929199732 | प्रदीप खत्री : 94141-74732

नाथद्वारा रोड, जलचक्की, कांकरोली, जिला-राजसमंद | कबूतर खाने के पास, राजनगर, जिला-राजसमंद

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर

राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

श्री अशोक गहलोत

श्री सचिन पायलट

डॉ. सीपी जोशी

सहज, सरल, मृदुभाषी, मिलनसार
व्यक्तित्व के धनी

श्री नारायणसिंह भाटी

विधानसभा राजसमंद-175
में कांग्रेस के प्रबल दावेदार

राजस्थान कांग्रेस कमेटी, राजसमंद

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To